GOSSNER EVANGELICAL – LUTHERAN CHURCH IN CHOTANAGPUR AND ASSAM

GELC ARCHIVE

Signature: **GELC-A _ 001 _ 0028**

Classification:

Original File No. 72

Title

General Assembly

Volume:

Running **from year: 1936** **till year: 1937**

Content:

- Agenda of General Assembly
- Inrolment of Members for attending General Assembly

72

TIGER

FLAT FILE

FILE No.________

ME ___Mahasabha___

JECT ___General Corre[illegible]___

AL NOS________________TO________________

1________________TO________________

YEAR ___1936-___ 19 37

सम्पत्ति विभाग का रिपोर्ट।

मुझे सम्पत्ति विभाग का मुख्य होकर सम्पत्ति महासभा को सम्पत्ति के विषय और उसके management के विषय रिपोर्ट देना निश्चय बहुत ही आवश्यक है, पर मैं अधिक खेद के साथ महासभा को जनाता हूं कि मैं असमर्थ हूं।

मैंने जबसे नई कौंसिल में जयदाद विभाग के लिये एक कमिटी बनी और मैं मुख्य नियुक्त किया गया तब से ही मैं यह जानने की बड़ी कोशीश की कि महासभा की हमारी जयदाद कितनी है, कौन२ जयदाद बोर्ड आफ ट्रस्टीज के और कौन २ जयदाद कौंसिल के जिम्मा रखी गई हैं। ~~परन्तु मुझे इसका भाव न~~ और इसका management किसके द्वारा और किस प्रकार किया जाता है परन्तु मुझे इसका पता अब तक नहीं लगा है। मुझे अब तक भी जयदाद सम्बन्धी कागजातें देखने में नहीं आई हैं। मैंने इस विभाग के भूतपूर्व मुख्य मि० पुर्ती से भी जानने को कई बार उनसे जांच की पर उन्होंने भी मुझे नहीं बतला सके कि कौन२ जयदाद किसके जिम्मा है और इसके management का प्रबन्ध कैसा है। मुझे इतने दिनों के अनुभव से यह स्पष्ट हुआ कि हमारे जयदाद के management का सुप्रबन्ध नहीं है और जिसके कारण हानि और नुकसानी भी बहुत होती है। हमारे कितने स्थानों की जमीन हमने खो बैठे हैं और उचित देखभाल और चिन्ता न होने के कारण खराबी भी हो रही है। उनसे हमको अधिक आमदनी होवे इसका सुप्रबन्ध नहीं हो रहा है और हमारी जयदाद किराये से रहे इसके लिये देखभाल नहीं किया जाता है। कितनी जगह की जयदाद ऐसी हो गई हैं मानो वे हमारी नहीं हैं और कितनी

जगहों में रूखे दोन और टांड़ खराब होकर गढ़ा पर परती ~~है रूप~~ है पड़ा है। कितनी जगहों में ये जायदाद पब्लिक की जायदाद हो गई है। लोग गिरान की जमीनों को अपनाए कर रहे हैं ~~जंगल~~ और गिरान की जगहों ~~को~~ में खेत डांड़ बनाते है। जंगल पर हकों के गाछ वृक्ष सब किसी के हो गये हैं और लोग अपनी इच्छा से काट के ले जाते और बरबाद भी करते हैं। इस प्रकार जायदाद खास रीति ~~से~~ से किसी के जवाब-दिही में न रहने के कारण बहुत तरह की हानि हो रही है। यदि हम जायदाद की रक्षा चाहते हैं और उससे अधिक आमदनी चाहते हैं तो हम को management का ~~बहुत ही अच्छा~~ सुप्रबन्ध करना निहायत ही आवश्यक है। मैं ~~बिनय~~ विनय करता हूं कि महासभा इस विषय पर गौर कर, विचारे और सुप्रबन्ध करने के उपायों को करे।

P. Kandulna

C. C.

महामान्यवर प्रेसिडेन्ट साहब गो०-एवं० लूथेरान चार्च-रांची को यीशुसहाय।

महाशय, मैं ने मई महीने के आरम्भ में आप को एक पत्र लिखा था, जिस में मेरे सफर करने का प्रोग्राम जो मैं तैयार किया था बताया था। उसी के मोताबिक सब प्रचारकपन के गांव नो घरों के भाई बहिनों को देखा और हर प्रचारकपन में भाई बहिनों को इकट्ठे कर मन्डली पन्चायत किया। दो प्रचारकपन को छोड़कर याने बेलबेड़ा और उलीहातु, बाकी छः प्रचारकपन में सेन्ट्रालाईजेसन नियमावली के मोताबिक संगठन किया गया। और हर प्रकार के काम के लिये पन्चों को नियत किया अर्थात सन्डे स्कूल, बिन्ती समाज, युवा-युवतियों का समाज वो बेबल पाठन समाज चलाने के लिये। अफ़सोस की बात है कि इन सब समाजों को चलु करने के लिये प्रचारकों को सिखलाना बहुत जरूरी है। वे सब इन सब कामों को चलाने के लिये आप ही लाचार हैं। अमलेशा पेरिश के सब प्रचारक अपने निज गांव में रहकर खेती बारी का काम भी खुद ही करते हैं जिससे मन्डली का काम जैसा अवश्यक है नहीं करते हैं। हां यहां तक कि कितने गांव के भाई बहिनों के पास कर्म्मचारी चार पांच महीने में केवल एकबार पहुंचते हैं। इसी से आप जान सकते हैं कि काम कैसा चलता था वो कैसा चल रहा है। फिर हर लूथेरान प्रचारकपन के बीच एस०पी०जी० मिशन के ख्रिस्तान भी हैं जिससे उनकी चाल व्यवहार भी मिश्रित है। जैसा नगरा आदि बाजा का वो नाचडेंग का व्यवहार हमारे ओर से रोका जाता है एस० पी० जी० मिशन से नहीं इस प्रकार अवसर देख दोनों तरफ के मिल जाया करते हैं। गांव में दोनों मन्डली का एक ही कबर भी है, इसके बारे में भाई बहिनों को समझाया कि लूथेरानों का कबर जहां तक बने अलग होना चाहिये। इस को छोड़ सिंगार के बारे याने हाथों में चुड़ी गले में माला इत्यादि का व्यवहार इधर से मना किया जाता है, एस०पी०जी० तरफ के नहीं मना करते, इससे संसारिक रीत दस्तूर लोप नहीं हो रहा है बैसा मतवालपन भी।

बहुत बरसों से सेन्ट्रालाइजेसन बन्द होने के सबब नियमानुसार एक दम से सुधर जाना कठिन जान पड़ता है। उन को प्रेम से समझाने बुझाने वो पन्चों को काम के लिये तैयार करने से धीरे२ सुधरने के ऐसा मालूम होता है। लेकिन अब बरसा के पहुंचने वो भाइयों के काम का दिन आ पहुंचने के सबब तुरन्त२ उन के पास जाना अनहोनी है। अब यह काम बरसात के बाद नियम पुर्वोक्त चलु हो सकता है। बरसात में प्रायः सब प्रचारकपन के प्रचारक वो पन्च नदी से रोके जायेंगे। इससे आपको खुलासा हाल बताना कठिन होगा कि सेन्ट्रालाइजेसन कैसा हो रहा है।

बड़े अफ़सोस की बात है कि खाश अमलेशा को छोड़ और कोई प्रचारकपन में स्कूल नहीं है, जिससे भाइयों के लड़के लड़कियों की वृद्धि होने में बहुत देर है। अमलेशा में भी बोर्डिंग नहीं जिससे देहात के लड़के यहां रखे जाकर किसी तरह उन्हें पढ़ाने का उपाय किया जाए। इस के बारे भी मैं हर प्रचारकपन में प्रस्ताव डाला और सब प्रचारकपन के भाई बहिन करार किये हैं कि अमलेशा में बोर्डिंग खड़ा किया जाये। निश्चय यह काम १९३८ ई० के पहले चलु नहीं हो सक्ता है। ऐसी घटियों के कारण मन्डली को आत्मिक वो लौकिक दशा में अमलेशा परिश बहुत पीछाड़ी पड़ी है। इसके लिये यथोचित उपाय न होने से बहुत देर लगेगा।

एवंजेलिस्ट का काम इस परिश में बिल्कुल ही नहीं चलता और कर्म्मचारी भी इस काम के करने में सहासी और उत्तेजित नहीं हैं। यदि एवंजेलिस्ट का काम यत्न से किया जाये तो खृस्तान होने का बहुत सम्भाव है, कारण एक दो जगहों में धर्म्म खोजक हुए हैं हां हाता में दो जवान छोकड़े मई महीने में धर्म्म खोजक हुए हैं। एवंजेलिस्ट का काम मैं प्रचारकों को दिखलाकर सिखाने चाहता हूं। यह काम ओक्टोबर महीने आस पास से आरंभ करने चाहता हूं।

खरसांवां पोलिटिकल में जोड़ाजंजिद नाम का एक छोटा प्रचारकपन है जिस में प्रचारक के साथ नौ घर हैं वहां केवल २५ प्राणी तक हैं। वहां के प्रचारक को सेन्ट्रोलाइज के न होने के कारण कौंसिल की ओर से माहवारी ५) रुपैया दिया जाता है। लेकिन वहां के भाई बहिन आत्मिक विषयों में बिल्कुल निश्चिन्त हैं। न तो गिर्जा घर न तो प्रचारक का घर बनाये हैं।

प्रचारक एक भाई के घर में रहता है और उसी भाई का घर ही में गिर्जा भी होता है। मैं ने उन्हें चिताते हुए कहा कि जब गिर्जा घर वो प्रचारक का घर बनाने का चिन्ता नहीं करोगे तो प्रचारकपन जोड़ाजंजिद से उठा दिया जाएगा।
इसी तरह दुसरे प्रचारकपनों में भी प्रचारक के लिये घर नहीं बनाये हैं, जिस से प्रचारकों को बदली करने में बहुत कठिन जान पड़ता है। इन बातों को देख मैं हर एक प्रचारकपन में अच्छा गिर्जा घर, प्रचारक का घर और कबर स्थान के लिये जगह देने के लिये भाई बहिनों को चिताया है।
बड़े अफसोश की बात है कि अमलेशा परिश के आठों प्रचारकपन में रखना रखनी वाले हैं कोई प्रचारकपन इस पाप से नहीं बच गया है, इससे आप मालुम कर सकते हैं कि युवा युवाती अपने इच्छा के अनुसार सब काम करते हैं।
जोड़ाजंजिद प्रचारकपन खरसांवा स्टेट के अन्दर है जिस से वहां का राजा साहब बालकों, धर्मखोजकों के स्नान के बारे और सादी के बार तलाश करते रहते हैं। कृपाय: मुझे जनाइये कि वहां के लिये पोलिटिकल एजेन्ट से सादी लाइसन्स लेने का दरकार है या नहीं यदि दरकार है तो लाइसन्स पाने का बन्दोबस्त कीजिये।
कृपाय: माफ करेंगे बसुकोचा के गिर्जा संस्कार के बाद मैं बिमार पड़ गया हूं और अब तक बिल्कुल अच्छा नहीं हुआ हूं। इस से आप को जल्दी ये सब हाल नहीं भेज सका। अगर अच्छा हो जाऊं तो आने वाली हप्ता उम्बुलबहा परिश जाने का इच्छा किया हूं जिस्में वहां सेन्ट्रालाइजेसन और पंच संगाठन का बन्दोबस्त करूं। हल में अमलेशा हाता में भाइयों के साथ हाता के सफाई वो सुधार काम में लगे हैं।

महाशय कौंसिल इलाका सेक० वो मेरे पत्र मोताबिक मेरे मदद के निवेदन पर १०) रु० खजन्ची साहब के द्वारा कूपन में यो लिखकर भेजा गया है "आप के निवेदन पत्र के अनुसार १०) रु० आप को अप्रैल वो मई महीने के लिये मिशन बाके के नाम से भेजता हूं"। मैं वह १०) रु० पाके इलाका खजन्ची को बताया। वह कूपन के लिखित को पढ़ कर मुझे ही खर्च करने का हुकुम दिये क्योंकि मार्च अप्रैल में मुझ को केवल ४) रु० दिया गया था।
उस के बाद इलाका खजन्ची खरसांवा स्टेट के मिशन बाकी के बारे खजन्ची से लिखा पढ़ी किया। उस का जवाब मिला कि पादरी बाबु को अप्रैल वो मई महीने का मिशन बाकी पैसा भेजा गया है उसे मांगा जाये। इलाका खजन्ची इस खबर को इलाका कार्य्यकारिनी मिटिंग में पेश किया। कार्य्यकारिनी सभा का कहना है कि यह कैसा गड़बड़ की बातें हैं? खरसांवां स्टेट के मिशन बाके के लिये कौंसिल जो मिशन बाकि ५) रु० माहवारी ठहराया हैं चेयरमेन के मदद में क्यों (भेजा है) मिलाया है। इलाके में सेन्ट्रालाइज न होने ही के कारण जोड़ाजंजिद के प्रचारक के लिये माहवारी ५) रु० कौंसिल देते आया है। अब कैसी अफसोश की बात है कि मैं जोड़ाजंजिद के प्रचारक का तलब अप्रैल वो मई का खर्च कर चुका हूं? खजन्ची साहब को साफ जवाब देना था कि चेयरमेन को मदद देने में कौंसिल इस समय सामर्थहीन है।
मेरा निवेदन है कि वह १०) रु० जो मेरे निवेदन पत्र के अनुसार १०) रु० कौंसिल मुझे भेजा है और मैं अपने खर्च में भी ले लिया हूं इलाका मुझ से न भरवाये कारण इस समय मैं सकेती दशा में हूं। कौंसिल मुझ को आइन्दे मदद देवे या न देवे पर लेन-देन में गड़बड़ न होने पाये।

आप का बिश्वास्त

अमलेशा
३०-६-१९३८

Barnabas Hemrom

KHAJANCHI KA REPORT 1936 KE LIYE.

Bhajan Sahita 68, 19. Dhanya hai Prabhu jo din 2 hamara bojh uthata hai. Khanajchi bishesh janta hai, ki hamari Mandli ki arthik dasha kaisi hai, aur yah bara bojh jo ham logon ko uthana parta hai kya 2 hai. Ham logon ko chinta karna parta hai, President aur Secretary aur unke Office aur Gharbandhu ke liye arthat mahina 2 unke liye Rs.122/8, Headsupervisor aur uske Office ke liye mahina 2 Rs.60/, Hospital aur 2 Compounder , 1 Ranchi, aur 1 Takarma ke liye mahina 2 ~~Rs.xx45/~~-.Rs. 45-8-0. 9 Padri logon ke liye jinka Pension dena parta hai, 1 Ex-President ka Pension ke liye, 1 Bible Woman aur 1 Chaukidar ke Pension ke liye. Pension mahina 2 Rs. 113/- dena hota hai.

Phir 41 Master logon ke liye jo M.E. Schools men hain.

16 Master logon ke liye jo Boys Primary Schools men hain.

19 Mistress logon ke liye jo Girls Schools men hain.

School ki sahayta ke liye C.C. mahina 2 Rs. 300-350 deta hai. Phir hamare Mission hatta aur 89 gharon ke repairs ke liye mahina 2 andaj Rs.50/- dena parta hai.

Age Congregation kam ke liye ham logon ko mahina 2 Rs. 41/8/- Phir 19 Widow logon ke liye bite hue sal men ~~har~~ Rs. 174/- diya gaya (ek bidhwa ko Rs.8-10-0).

Congregation ke Mission kam ke liye ham Tamar ke kam men Rs.5/- mahina 2 dete hain.

Bara bojh bhi Gharbandhu hai, bat aisi ~~ka~~ nahin hai, ki uska kam nahin chal sakta hai. 1188 subscribers hain, parantu bishesh bojh yah hai, ki parhne hare apna subscription fee thik se nahin dete hain. Pastoron ke arrears hai Rs. 1563/-, School ka arrears hai Rs. 158/- aur Outsider logon ka arrears hai Rs. 1169/-. Sabhon ke pas ber 2 reminder diya jata hai, kintu bara bojh hi hai, ki itne log apna duty nahin pahichante hain.

Bara bojh bhi Loan hai, jo Trustee Board se liya gaya arthat Rs. 11,500/- aur usko chhor karke Press se Rs. 5000/- aur Babu Patras Sanika Herenz se Rs. 1000/-. Loan ka Interest kewal Rs.1000/- ke liye diya gaya. Trustee Board ke Loanon ke liye Interest nahin diya gaya aur Trustee Board ka Khajanchi kahta hai ki Church Council Interest na denese main Widow Fund ke liye kuchh de nahin sakta hun. Jadi ham

High School ke gharon ke aur Bungalows aur Girja gharon ke repairs ke liye sab dene chahte hain to Trustee Board Capital se Rs.7000/

uthana awashyak hai, kya Mahasabha ki ichchcha hai.

1937 ke Budget ke anusar Central Institution ke liye Rs.8956/- Deficit hota hai.

Phir bara bojh dikha diya jata hai, yadi ham Congregation ke bishay thik se bichar karte hain, Budget ke anusar Congregation Expenditure hai Rs. 74,962/- aur Income kewal Rs. 41,760/- Congregation ke liye Rs. 33,202/- deficit hota hai.

Ham logon ko malum howe, ki itna hi deficit hota hai, yadi har ek Padri aur Pracharak Scale ke amusar apna praya pura talap pate hain.kintu usko dekh karke ham logon ko malum hoga, ki hamare karmchari logon ki kathinai kitna bari aur aur unka bojh kitna bhari hai. Sachmuch hamara bojh bahut bhari hai, taubhi ham apna man ko chhota na kare, hamara ek sahayak hai aur bite hue sal men Prabhu ne bhi hamari sahayta kii hai. Dhanyabadi man se ham sab se pahile Assam ke bhai bahin logon ko yad karen, jinhon ne mahina 2 praya Rs. 50/- bheja hai. Chhotanagpur ki mandliyon men se Jamshedpur Rs. 25/-, Burju se Rs.10/4/- aur Kondra se Rs. 2/- bhej diye. So mot jama Chhotanagpur se kewal Rs. 37/4/- aur jo baki hai sab Assam se diya gaya arthat Rs. 567/5/6. (Assam ka 2 bhai to aye hain aur we ham logon ko batawe, ki bhai bahin logon ki atmik aur arthik dasha Assam men ajkal kaisi hai).

Phir Gossner Mission se ham logon ko mahina 2 Rs. 520/- diya gaya. Annual Statement dekhne se malum hoga ki Rs.6374/- mila. Ham Prabhu ka dhanyabad karen ki itni sahayta abtak German desh se bite hue sal men hui hai.

School ke bishay to Headsuperviser Report de chuka hai.

Lutheran Federation ko ham log apne sare man se dhanyabad bhi karte hain, ki America ki sahayta ke dwara se ham logon ko Rs. 1333/- mila hai. Maha Manyawar Bishop Sandigreen ke dwara se Rs. 60/-, Mr.Panna se Singhani ke School ke liye Rs. 50/- aur Paulus Minz Mistri se Rs.10/- aur Rev.P.C.Punuria se Re.1-4-0 mila hai

Achchha hota jadi main aur logon ke bishay bata sakta ki unhon ne apne danon ko Central Fund ke liye bheja hai, par apsosh ki bat hai ki aur paya nahi to kya karun? Phir Jubilee Fund ke liye sab mandliyon se Rs. 299-13-0 mila hai. Kaiek Mandli se kuchh nahin paya hai, yah sachmuch bhi udas ki bat hai. Taubhi main unko jo Jubli Fund ke liye apna chanda bhej diya hai sare man se dhanyabad karta hun. Ye rupaiye

to hamare hath men rah gaye hain aor Home Board ko sunaya gaya ki achchhi bat hogi yadi ham in rupaiyon ko bishesh Padri Pracharak aur Prachin ke shiksha class ke liye rakhenge.

Hamara Statement delhne se ap ko malum hoga ki sal ke ant men Rs.1123-1-3 hath men rah gaya hai. Ye rupaiya abhi April mahine ke liye hamari bahut sahayta kii ki main Schoolon aur talap aur Pension ke liye sabhon ko de sakta tha. Hamara hath men abhi Rs.593-5-6 hai. In rupaiya men se High School ko Rs.600/-, maramat ke liye dena parta hai aur Rs.300/- Press men aur dena baki hai. Dhanyabadi man se ham log kahenge roj 2 Ishwar kistuti howe, usne ham logon par bara bojh rakha par hamari sahayta roj 2 bhi kii hai. Aur jarur Ishwar hamari sahayta itna adhik aur karega jitna adhik ham log uske bachan men man laga ke us ke sachche shishy ho jayenge. Pahile Ishwar ka rajy aur uske dharmm ka khoj karo to tum ko ye sab bastu bhi diye jayenge. Jitna adhik atmik jiwan hamate mandliyon men barhega itna adhik ham log Ishwar ke dhanyabad karne ko bhi man lageyenge. Jadi hamare man Ishwar ke liye jwalit hoga, to snan ke samay men, ma bap kewal As.1 nahin parantu kabhi 2 Re.1 dhanyabad ka dan charahawenge, waisa hi drithapan pane men dhanyabad ~~kaxdx~~ ke ~~tyx~~ liyebahin lo g As.1 ke badle men As.8 bhi denge aur Prabhubhoj ka dhanyabad ka dan As.1 se kamti nahin diya jayega, atmik jiwan adhik hone se koi bhai awega aur dhanyabad ka dan lake bolega main Doctor ka bill ka dan Ishwar ke liye sonpta hun, dusra awega aur bolega sal bhar mera koi goru nokshan nahin hua hai so main ek bail chahe ek bakri ka dam Prabhu ke kam ke liye sonpta hun. Atmik jiwan adhik hone se sirni paisa, mandli paisa ghara sirni aur dusre dan dhanyabadi man se bhi diye jayenge.

Prabhu daya kare ki America desh se is naye sal men ham ko adhik rupaiya mile. We sachmuch deficit aarthat 48000/- rupaiya bhej to nahin sakenge, parantu jadi usse chautha bhag arthat Rs. 12000/- kewal hamare pas bheja jawe to hamari bahut sahayta hogi.

Aur jitna ham log nij kar sakta hai itna jarur ham log man laga ke mandli ke amdani barhane ko koshish karenge. Har ek drirhikrit jarur mahina 2 hamara Central Fund ke liye 1 paisa de sakta hai us se sal men Central Fund ke liye Rs. 23472-7-0 diye jayenge. Waisa hi kaiek upai ~~ha~~ hai ki amdani barhaye jawe, jahan ichchha tahan upai. Din ba din Prabhu ki stuti howe, wah hamare upar bojh rakhta hai par hamari sahayta bhi roj 2 karta hai.

W. Radsuk.

Fil

My dear Mr. Kandulna,

I am leaving Madras on the 6th. to visit Ranchi as the Federation delegate to the Mahasabha. It gives me great pleasure to be able to attend the Mahasabha a second time & renew my personal bond with the dear Gossner church.

I must leave Ranchi on the 13th. afternoon, so that I may arrive at Madras by Nagpur (Grand Trunk) route on the 15th. So I shall arrange to arrive at Ranchi from Jharsaguda

on the 10th night or 11th morning
for spending a day with you
before the session of the Maha-
Sabha begins. With cordial greetings
to you & all the church leaders &c.
Yours sincerely
J. Z. Asirvadam

Your letter re Pastor Hemeravin
sent to Ranchi etc reached me
yesterday: certainly he can
go. But re money help
he should have applied long
ago. It is never too late for
me to arrange it with the
NMS Office. I shall do my
best whilst at Jharsa.

Joe

To,

The Secretary of the Church
Council
Ranchi.

Dear Sir,

I have received your letter of the 9th instant & have come to Ranchi for the Conference & shall be pleased to place my matter before that august body when called upon to do so.

Yours faithfully

9/4/37

File

Rev.J.H.Schernat. Tezpur, the 5th April 1937

Mr. P.D. Kandulna, Secretary,
G. E. L. Church,
RANCHI, Behar.

Dear Mr. Kandulna,

I regret I was unable to send the forms before this day. For some ~~day~~ time I was out on tour and received your letter on my return. The other difficulty was to get the figures which I had to receive from the congregations as no copies of the year 1935 are available here. Even then I did not receive all the information I needed. Will you please ask the treasurer to supply you the Mandli hisabs for 1935 which must be in Ranchi.

I shall not come for the Mahasabha this year. There is no money in our treasury at present, and to go without money is rather impossible. I hope that the three representatives from Assam who have been proposed will be there in time.

With best regards,

Yours sincerely

J. Schernat.

Church Council
Received 9.4.37.
Register 19
Date 8.4.37
File 51.
Reply No.........
Date.........

File

9/4/37

Rev.J.H.Schernat. Tezpur, the 5th April, 1937

Dear Mr.Kandulna,

Ourb representatives from Assam will start to-morrow for Ranchi to attend the Mahasabha. I am writing to say that our Rev. Abraham Topono who was also about to come is now unable to start. He came to Tezpur where it was found that he has some wounds which give him much pain. Therefore he will remain in Tezpur and try to get cured. Will you kindly excuse his absence from the Mahasabha. Is was considering his case but I myself find it impossible to send him under these circumstances. If he would go he would have to attend the hospital in Ranchi. On the other hand I tried to send some one else in his place but it impossible to find another representative in this short time. Therefore two representatives must be sufficient for this time. I am sorry that our Assam parishes will not be represented as usual but there is no other help.

It has become very hot in Assam. The rains have already started and it seems that we shall have this year a very long rainy season.

Though I am unable to be present in the Mahasabha I shall pray to God that He may give His blessings to every member of the Mahasabha. I shall be very glad to hear that this Mahasabha served the one purpose to glorify the great name of our beloved God and Father. May His kingdom come, may His will be done during every hour of this meeting! God help also you and the other members of the Church Council to stand, to speak and to act in His name and for His sake. I am sure that besides me there are many in Assam who will support you all with their prayers.

With kind regards,

Yours sincerely J. Schernat.

ગોવિંદપુર - કલાના
ગીગો ટાટો - કાનાભ
વાઘિપ - તોડ
ઉંઝવાલા - ઉંડાળ - ઉમેટાખ
રરખુસ - ઉમપેખ -

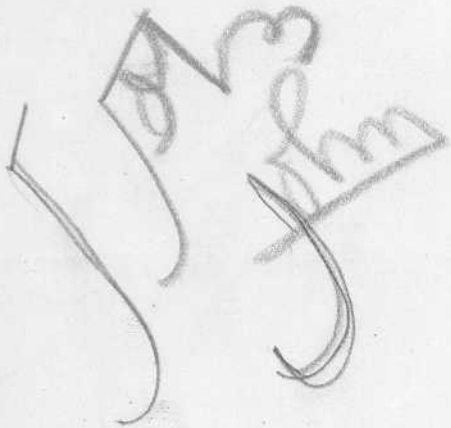

Kirwijs Visitor

Nicodim Samad.

To

The Secretary Mahasabha
Ranchi.
12-4-37.

Sir,

Please enlist the following names among the visitors list.

1. Ishwar Sahay Kujur
2. Masihdayal "
3. Christ Muni "
4. Anandini Minz
5. Christ Mikhael Tiga
6. Masihdas Minz
7.

Bonjin Ilake se
Visitor

Mrs L. Kongari.
Dand Munda.

ઓ ઓ ટારક—

ઓઉરૂ. પ્રવેશ -

1 મુસાફર – ઈડગ—
2 કામ – બિલ્વાર લખ્યા
3. ખીરીરત – બાબાજીનાં માણી
ઈડગ–

Ranchi Stalea.
visitors Name.

1. Dayadhani Minz. Nagri.
2. Paulus Toppo. Separom.
3. David. Ekka. Nagri
4. Manieth Toppo. Nagri —

Abera Ranilakshy
the 9th April 37

Seminarists.

1 Dharmdas Gurie
2 Eliazar Kindo
3 P. Silas Bage
4 Manoth Toppo
5 A. T. Lall
6 Julius Surin
7 David Soy
8 Paulus Beck
9 Bishwanath Lakra
10 Anandmasih Toppo
11 Kuwalmay Toppo
12 Marlin Hitkai
13 Santosh Surin

Dayadhan Misra
Samuel Barla

Koranjo

Dirmal Khalkho

To

The Secretary Mahasabha
Lutheran church.

Sir, We the undersigned intend to visit the annual conference. We therefore request that we may kindly be allowed to attend the conference as visitors.

Yours faithfully

1. ~~M. [illegible]~~
2. [illegible]
3. Micha [illegible]
4. [illegible]
5. Malaki Lakra
6. A.W. Kerjan [illegible]
7. David Ekka.

Govindpur Ilaka.

Visitors

Babu Johan Toppo.

" Andrias Horo

" Niribandh Horo

" ~~Benyamin Horo~~

" Benhu Herenj

" Handugan "

" Philip Hemrom

" Suleman Bhengra

" Laban Munda

" Masihdas Toppo

" Immanuel Toppo

" Prabhudatt Aind

" Mathias Bhengra

~~J Soreng~~

Visite

I. Toppa }
Ch. Tere } Sesoratti.

Visitors.

Komal Lakra

Members.

Pension Paid

Rev. D. P. Allen

P. Ming

K. C. Sokey

Mahasabha Visitor

Babu Jaymasih
Ekka

Visitor

Mrs. C. D. Emm

17/4/37

Visitor's from Takarma Ilaka.

1. Yakub Bage,
2. Yusaph Horo,
3. Puranprasad Manki,
4. Timothius Dang,
5. Yunas Horo,
6. Patras Jojowar,
7. Prabhusahay Dang,
8. Nathaniel Topno,
9. Anandmasih Kongari,
10. Masihdas Kerketta,
11. Isahak Manki.
12. Prabhudayal Topno.
13. Christopal Bage.

The Secretary

G. E. L. Church Council.

Dear Sir,

I shall have bath this morning. Therefore I shall not be able to attend Conference. I pray for leave for this morning only.

Yours sincerely
Benjamin Minz

14. 4. 1937.

[illegible]

1 Khet Kharida jawe
2. Managing Committee ~~~~
fund jama Kare
3. Bank
4 Kheti Kia jawe

~~2 M.V. Pass Karthain~~

M.V. Pass Karthain

M.V. Pass Karthain

M.V. Pass Karthain

10th Pass

Nurse

Training

Aaga walah

Aaga walah

Committee's Recommendations.

----------oOo----------

1. We unanimously recommend that in the present situation the Board send Mission Director J. Stosch for special work in the ~~x~~ Gossner Church for a period of five years.

2. That to relate his position to the Church so that it might come within the constitution~~and~~ and to give him a position wherein the ~~Church's~~ Church's intention in inviting him may be fully realised we recommend that the Mahasabha invite him to be the President of the Church for that period.

3. That as the spiritual leader of the Churchspecially commissioned to deal with the present difficulties he as President be more than a mere Chairman of the Church Council and the Mahasabha and will be entitled to put before the Church Council and the Mahasabha his views about any matter which he might consider of ~~xxxxx~~ importance.

4. That he will have full authority to negotiate with outside bodies and that he ~~wxil~~ need not necessarily wait for definite resolutions of the Church bodies.

83/37/F.-51 12 April, 37.

Mr. N. Soy,
Lutheran compound,
Ranchi.

Dear Mr. Soy,

In the morning Session you have been co-opted a member of the Mahasabha. I therefore cordially invite you and request you to be present in the Mahasabha throughout the Session.

Yours sincerely,

[signature]

82/37/F.-51 12 April 37.

Mr. S. Purti,
Siromtoly,
Ranchi.

Dear Mr. Purti,

In the morning Session you have been co-opted a member of the Mahasabha. I therefore cordially invite you and request you to be present in the Mahsabha throughout the Session.

Yours sincerely,

Committee's Recommendations.

--------oOo.--------

1. We unanimously recommend that in the present situation the Board should send Mission Director J. Stosch for special work in the Gossner Church for a period of five years.

2. That to relate his position to the Church so that it might come within the constitution and to give him a position wherein the Church's intention in inviting him may be fully realised,we recommend that the Mahasabha invite him to be the President of the Church for that period.

3. That as the spiritual leader of the Church specially commissioned to deal with the present difficulties he as President will be more than a mere Chairman of the Church Council and the Mahasabha and will be entitled to put before the Church Council and the Mahasabha his views about any matter which he might consider of importance.

4. That he will have full authority to negotiate with outside bodies and that he need not necessarily wait for definite resolutions of the Church bodies.

कमिटी की सिफारिशें।

हम इस वर्त्तमान स्थिति में सर्व्व सम्मति से सिफारिश करते हैं कि बेलिन बोर्ड मिशन डाईरेक्टर ~~को~~ जे स्तोश को, विशेष ~~रूप~~ काम के निमित्त गोस्सनर कलीशिया में पांच बर्ष तक काम करने के लिये भेजे।

कि उनका स्थान कलीशिया में ऐसा होवे जो कि नियमावली के अनुसार या उसके भीतर हो और उनको ऐसा स्थान दिया जावे जिससे कि कलीशिया के, ~~उ~~ उनको बुलाने का पूरा अभिप्राय सिद्ध हो। इस कारण हम सिफारिश करते हैं कि महासभा उनको उपरोक्त समय के लिये कलीशिया का प्रेसिडेन्ट होने को बुलावे। ~~औ~~ वह आत्मिक अगुवा होकर जो वर्त्तमान कठिनाईयों के हल करने को बिशेषरूप से भेजा गया हो, चर्च कौंसिल और महासभा के चेयरमैन के साधारण अधिकार से अधिक अधिकार रखें अर्थात यह अधिकार उनको होवे कि वे चर्च कौंसिल और महासभा के सामने किसी बिषय के अपने बिचार को जिसको वे अधिक आवश्यकता समझें रख सकें।

कि उनको बाहर की संस्थाओं के साथ लिखा पढ़ी करने ~~को~~ का पूरा अधिकार होवे और उनको इस काम के लिये आवश्यकता से कलीशिया की संस्थाओं के संकल्पों की अपेक्षा करना न पड़े।

गोस्सनर ~~स~~ एवंगेलिकल लूथेरान कलीशिया की
१९३६ के लिये सेक्रेटरी की रिपोर्ट।

प्रिय सभासदगणों, बहिनो और भाईयो!

हम ईश्वर को अत्यन्त धन्यवाद और प्रशंसा देते हैं कि उसने हमें यह सुअवसर ~~दिया~~ है फिर भी ~~इस~~ इस वर्ष में दिया है कि हम इस महासभा में उपस्थित होकर उसके राज्य विषयक बातों का विचार कर सकते हैं।

१९३५ की अतिरिक्त महासभा के फैसले के अनुसार महासभा १९३६ साल में नहीं बैठी और इस लम्बे समय के बीच के कामों और घटनाओं के विषय महासभा को जानने की अभिलाषा निश्चय हुई है। क्योंकि प्रेसिडेन्ट अपने रिपोर्ट में कितनी बहुत बातों का उल्लेख कर चुके हैं, मैं केवल थोड़ी बातों में ~~अ~~ अपने रिपोर्ट को आप के सामने पेश करता हूं।

१९३५ की अतिरिक्त महासभा के फैसलों के ~~अनुस~~ अनुसार १९३६ में अतिरिक्त काम भी हुए हैं जिनका उल्लेख थोड़ी बातों में करना चाहता हूं। पहिले मैं आप लोगों के और नई कौंसिल के मेम्बरों के सहयोग के कारण ~~आ~~ सब को धन्यवाद देता हूं। हमारी नई कौंसिल के सब मेम्बरान जो हमारी कलीशिया के हर एक भाग को represent करने के अभिप्राय से चुने गये हैं अधिक दूरों से आने की कठिनाई और दूसरे प्रकार की कठिनाईयां होने पर भी बीते ~~सब~~ सब वर्ष के अन्दर ~~काम में अधिक सहायता पहुंचाये और~~ बैठकियों में उपस्थित होकर काम में अधिक सहायता पहुंचा सके हैं। ∴ पूरी कौंसिल और कार्यकारिणी सभा की बैठकियों में उपस्थिति सन्तोषजनक थी।

मिडरशन कमीशन की सिफारिसों और महासभा के उन्हें ग्रहण करने के द्वारा कलीशिया में कई बड़े और विशेष काम भी किये गये हैं। (1) हमारे ~~पू~~ भूतपूर्व्व प्रेसिडेन्ट Emeritus जिनके retire करने पर उन्हें पेन्सन देने की सिफारिस भी पूरी की गई। उन्होंने कितने समय तक काम से

फुरसत ~~के~~ लेने काही विचार कर पेन्सन के लिये दरख्वास्त दिया और उन्हे कौन्सिल पेन्सन देने कीही फैसला की।

(ii) हमारे ~~प्रेसिडेंट~~ भूतपूर्व सेक्रेटेरी ~~जिनके~~ के retire करने पर उनके काम का प्रबन्ध करने की भी शिफारिस की। उनके लिये काम का प्रबन्ध करना निहायत ही कठिन था परन्तु फिडरेशन के परिश्रम और चेष्टा से वे इन्हे भी कलकत्ते में काम दिया गया और वे कलकत्ते के लूथेरान काम के जिम्मे रखे गये हैं। यह बड़ेही आनन्द का विषय है कि जिस काम को कितने वर्षों से भारत की लूथेरान मंडलियां खोलने की चिन्ता में थीं इस समय ~~खोली जा~~ आरम्भ किया जा सका और वहां हमारे लूथेरान भाई बहिनों का देख भाल और चरवाही की जा रही है। यह बहुत ही आनन्द की बात है कि कलकत्ते में इतनेही समय के काम के द्वारा से एक मंडली खड़ी हो गई है जिसमे प्रायः सबके सब हमारे छोटा नागपुर के खीष्टियान लोग हैं। यह हमारे लिये ईश्वर को अधिक धन्यवाद देने का कारण हुआ है कि इस उद्योग से विशेष कर हमारे लोगों ही की रक्षा और भलाई हुई है। समाचार है कि स्वीडिश मिशन इस काम को अपने हाथ लेगी और आशा है कि हमारे कर्मचारी भी वहां काम करने पावेंगे और उस कमिटी में हमारे मेम्बर भी रह कर हमारी राय ओ सलाह प्रगट कर सकेंगे।

(iii) हमारे हाई स्कूल के ~~मि~~ भूतपूर्व प्रिन्सिपल के काम के विषय भी अधिक कठिनाईयां थी। फिडरेशन कमीशन की शिफारिस के द्वारा उन्हे भी कितने वर्षों तक के लिये किसी दूसरे स्थान में काम करने की बात थी। परन्तु हमे लूथेरान फिडरेशन को अधिक धन्यवाद देना उचित है जिन्होंने हमें न केवल सलाह ~~देकर जस~~ दिया परन्तु अपनी शक्ति भर हर प्रकार से सहायता देने की चेष्टा की है और करते हैं। उनके कठिन परिश्रम और प्रार्थना के द्वारा ईश्वर ने मार्ग बताया। जैसे बिशप Sandegren साहेब अपनी १० जून की चिट्ठी में लिखते हैं — There has been

अर्थात — कल मैंने एन० सी० सी० ~~के~~ सामने आप
लोगों की आवश्यकता को ~~एक~~ विचार निमित्त
रखा और एन० सी० सी० ने मेरी प्रस्ताव को
ग्रहण की और एक छोटी कमिटी बनाई जो
उन पीड़ित जर्मन मिशनों से लगाव रखने वाले ~~कलीसियाओं~~ मंडलियों के लिये इंगलैण्ड
अमेरिका और युरोप में चन्दा बटोरेगी, ~~जो जर्मन~~

※ मि० लकड़ा के स्कूल छोड़ने पर कितने समय के लिये मि० अमृत लाल तिर्की हमारे हाई स्कूल के ~~प्रिन्सिपाल~~ आफिशियेटिंग प्रिन्सिपाल बनाये गये थे पर अब मा० डाक्टर वोल्फ के जर्मनी से आने पर वे स्कूल के प्रिन्सिपाल नियुक्त हुए हैं आज हम उन्हें भी आपने बीच में देख कर आनन्दित हैं।

अर्थात— इस प्रकार आप लोगों को कलीशा के लिये बहुत प्रार्थना की गई और यह मालूम होता है कि ईश्वर ने हमारी प्रार्थना को सुनी है, जैसे आप लोगों को आन्ध्रा क्रीश्चियन कालिज के प्रिन्सिपल डाक्टर जे० आर० स्टोक की चिट्ठी से मालूम होगा, जिसको उन्होंने रेवरेन्ड जे० लकड़ा के पास लिखा है।

यह हम सबों के लिये एक नया प्रमाण है कि ईश्वर प्रार्थना को सुनता है और जहां हम लोगों को कुछ नहीं सूझता है वहां मार्ग बतलाता है।

much prayer for your church and it seems that God has heard our prayers, as you will find from enclosed copy of a letter from Dr. J.R. Strock, Principal, Andhra Christian College, to Rev. J. Lakra.

It is to us a new proof that God hears prayers and provides a way where we find no path. मि० लकड़ा के लिये भी फिडरेशन हीं ने काम का प्रबन्ध किया और उन्हें आन्ध्र क्रिश्चियन कालिज में काम दिया गया। वे १ली जुलाई को रांची छोड़ और अब गुन्टूर कालिज में काम कर रहे हैं। ~~इन कामों के~~ ✗

इन कामों के अतिरिक्त फिडरेशन कमीशन के रांची आने के पीछे हमारी कलीसिया और लूथेरान फिडरेशन के बीच अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध होगया है। लूथेरान फिडरेशन हमारी कलीसिया के विषय अधिक चिन्तित हैं और हमें हर प्रकार हमारी सहायता की चेष्टा कर रहे हैं। उन्होंने कई बार हमें आर्थिक सहायता भी पहुँचाया है। १० जुलाई को उन्होंने ~~कोडाइ~~ कोडाइकनाल से ६०) रुपैया की सहायता भेजी है और फिर दो बार अमेरिका से पांच पांच सौ डोलर की भी सहायता प्राप्त की है। अभी भी उनके हृदय हमारी आत्मिक और आर्थिक अवस्था सुधारने की बड़ी लालसा लगी हुई है जो आप लोगों को बिशप Sandegren के प्रस्तावों से मालूम होगा। वे अपनी १ली अप्रैल की चिट्ठी में भी लिखते हैं yesterday I placed the need of the Gossner Church before the N.C.C. which accepted my proposal to appoint a small committee to collect money in England, America and Europe for the suffering Churches connected with German Missions. इन सहायताओं ~~व~~ सलाहों और चिन्ताओं के कारण हमें फिडरेशन को हार्दिक ~~धन्य~~ धन्यवाद देना उचित है।

बीते समयों में बेर्लिन बोर्ड भी हमारी कलीशिया के लिये अधिक चिन्तित थी। और हमारी कठिनाईयों में अपनी अधिक सहानुभूति दिखाई है। उन्होंने हमारी कलीशिया के लिये विशेष प्रार्थना और परिश्रम किया है। वे हमे थोड़ी रकमों की सहायता भी देने को जारी रखा है और इसी सहायता के द्वारा हम ~~लोगोंने~~ स्कूलों को मदद पहुंचा सके हैं और उन्हें रख सके हैं।

बेर्लिन बोर्ड को यह भी ख्याल हुआ है कि छोटानागपूर में काम भी बहुत है और बनिहार थोड़े हैं। और इसी ख्याल ने उन्हें चलाया और वे हमारी कलीशिया में काम करने को पांच मिशनारियों को फिर भेजा है। जिनमेंसे ~~तीन~~ चार लेडी मिशनरी हैं। ~~और दो~~ डाक्टर वोल्फ, उनकी पत्नी जो भी डाक्टर हैं और रेव० क्लिमकाईट २२ जनवरी को विलायत से रवाना हुए और रेव० क्लिमकाईट १० फरवरी को और डाक्टर वोल्फ अपनी पत्नी के साथ ६ मार्च को रांची पहुंचे हैं। ~~मिस ख्लीशक को भी हम अपने बीच पाकर बहुत हर्षित हैं क्योंकि अभी वे मिशनरी तो नहीं हैं पर हमें बहुत कामों में सहायता पहुंचा रही हैं।~~ डाक्टर वोल्फ हमारी कठिन आवश्यकता को दूर कर हमें काम में अत्यन्त मदद पहुंचाया है। वे जैसा कहा जा चुका है हमारे हाई स्कूल के प्रिंसिपल होकर उसका भार ले चुके हैं। ~~उनकी पत्नी~~ और मैं अपनी पत्नी के साथ हाई स्कूल और सेमिनेरी को चलाने में अधिक सहायता पहुंचाये हैं। हम बेर्लिन बोर्ड को ऐसी चिन्ता और प्रबन्धों के कारण अधिक धन्यवाद देते हैं।

अब मैं लिखा पढ़ी और कई बार देहात में tour करने के द्वारा हमारी मंडली ~~और~~ की अवस्था का जो अनुभव हुआ है सो थोड़ी बातों से आप लोगों को जनाना चाहता हूं। हमारी गोस्सनर मंडली को अपने नामों लिये अभी अठारह वर्ष हो जाते हैं और इतने दिनों में हमें अधिक अनुभवी होना उचित था और कठिनाईयों का सामना करते हुए हमें गिरने और उठने के कारणों को जान लेना और भविष्यत में अधिक सावधान और दृढ़ होना उचित था। परन्तु यह कहना अति कठिन है कि हम अधिक उत्साहित और बलवन्त होते

अर्थात — हम जर्मनी के बाहर विदेशों को ~~पैसे नहीं भेज सकते हैं~~, सिवाय ~~सरकारी थोड़े~~ निश्चित किये हुए थोड़े सरकारी पैसे के और नहीं भेज सकते हैं।

जाते हैं। हमारे बीच अब तक कितनी त्रुटियां हैं कितने बहुत लोग विश्वास और प्रेम में ठंढ़े और निरुत्साहित होते जाते हैं। कितने लोग जो ~~हमारे लूथेरान~~ बिश्वास मे कमजोर हैं छोटी और आपस की बातों के कारण या आपने बीच के मतभेद के कारण लूथेरान कलीशिया को छोड़ने को तैय्यार हो जाते हैं। कितने कर्मचारियों के साथ उनकी सम्मति न होने के कारण या खेतों के विषय झगड़ों और दूसरी लौकिक बातों के कारण अपने लूथेरान विश्वास को छोड़ देने को तैय्यार हो जाते हैं। यह भी मालूम हुआ है कि कितने लोग औटोनोमी के भार को ~~उठाने~~ न उठाने की इच्छा से या औटोनोमी की रक्षा और मंडली सम्भालने के लिये चन्दों के भार ~~को~~ के बोझ से लूथेरान बिश्वास को त्यागने को तैय्यार हो जाते हैं। हमारे बीच अब तक भी मिथ्य विश्वास, मतवालपन और दूसरे अनुचित काम जड़ बान्धे हुए हैं। अ। हमे अब अधिक सावधान होकर ~~इन दोषों को दूर करने~~ और नये उपायों को खोजकर इन दोषों को दूर करना अति आवश्यक है।

मंडली की आर्थिक अवस्था निश्चय ही सोचनीय है परन्तु यह कहना भी गलत नहीं होगा कि जितनी ~~चेष्टा और~~ चिन्ता हमों को करना उचित था इतनी चिन्ता और चेष्टा नहीं की गई है। हमारे देनों के नियमों पर भी अधिक ध्यान नहीं दिया गया है और हमों में ढीलापन भी आ गया है।

जर्मन सरकार की अधिक शख्ती ~~के कारण~~ करने के कारण हमे जर्मनी से जो थोड़ी सहायता मिलती है उससे अधिक पाने की आशा या दूसरे प्रकार की सहायता पाने की आशा भविष्यत में नहीं की जा सकती है। जैसे डौक्टर स्लोश साहिब ~~आप~~ लिखते हैं We are not allowed to send foreign money out of Germany except the comparatively small monthly allotment.

हम बिदेशी सहायता ~~पर~~ की आशा बिलकुल ही छोड देवें यह कहना भी अधिक कठिन है पर यह भी उचित और

और सम्भव नहीं है कि हम सिर्फ विदेशी सहायता पर ही आंख लगाये रहें। ~~यह~~ न केवल हमारी परन्तु सब कलीशिआओं की भी ऐसी कठिनाईयां हैं, जिनका सबन्ध जर्मनी से है। ऐसी तो सभी मंडलियों की आर्थिक कठिनाईयां हैं। औ विदेशी सोसाईटियां जिनसे यहां की मंडलियों को सहायता पहुंचती है चिन्ता में हैं ~~[illegible]~~ कि क्यों यहां की मंडलियां स्वापालित मंडलियां नहीं होती हैं। बारम्बार यह पूछा जाता है कि भारत की मंडलियां अब प्रायः एकसौ बरस की होती हैं पर क्यों वे अपने को नहीं सम्भाल सकती हैं और क्यों उनमें जातीय और दूसरे भेद और धर्म के विरुद्ध काम अबतक हुआ करते हैं? यह बहुत सच भी है कि बिश्वास की घटी के कारण ही यहां की मंडलियां अपने पैरों पर खड़ी नहीं रह सकती हैं। बिश्वास की क्यों ऐसी घटि है? इसी कारण कि यह बिश्वास लोगों के दिल को बदल डालने के साधन में नहीं लाया गया है। हम बिश्वास के द्वारा बचाये जाते हैं परन्तु कर्म बिना बिश्वास बिश्वास मृतक है। ~~हम इस कारण आगे और~~ हमने विदेशी सहायता के भरोसे ही आत्मशासन को नहीं लिया है परन्तु परमेश्वर के नाम पर बिश्वास और उसी ऊपर भरोसा रख कर अपने कांधों पर मंडली का भार लिया है। आजकल हम आर्थिक दुर्दशा ~~पर सोचते~~ और पैसे कौड़ी की घटी के कारण निराश होके बिश्वास और ईश्वरीय भरोसा में कम हो गये हैं। हम लोग यह जानें कि यदि हमारा ईश्वर पर भी भरोसा दृढ़ और सच है तो वह हमारी निश्चय सहायता करेगा वही दूर बिदेश के कुछ बिश्वासियों को भी हमारी सहायता के निमित्त उठावेगा। इस कारण हम सच्चे बिश्वास ~~के साथ~~ ईश्वरीय प्रेम के साथ काम और उद्योग भी करें कि ईश्वर की महिमा हमारे द्वारा होवे।

मैं मंडली शासन पर थोड़ी बात कहना चाहता हूं। यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि हममेंसे हर एक को यह कर्तव्य मिला है। प्रचारक पन पंच को अपनी मंडली ~~के कारण~~ को और पैरिश

पंच को ~~का~~ अपने पैरिशमें और इलाके पंच का इलाकेमें भारी जवाबदिही है हम मंडली के अगुवे है और हमें अगुवा होकर अगुवों का पुरा रखना चाहिये। हम स्वार्थहीन होवें। यदि ~~ह~~ हम अपने लाभ और स्वार्थ और मतलब निकालने को मंडली का अगुवा बनें तो हमारा काम असफल होगा उससे हानि और नुकसानी होगी। परन्तु जब हम स्वार्थ त्याग कर केवल ईश्वर की इच्छा खोजे और मंडली की भलाई और लाभ पर दृष्टि करें और चिन्ता करें तो निश्चय हमारा अगुवापन सफल होगा। और तबही कलीसिया की उन्नति होगी। इसलिये हम जो मंडली के अगुवे हैं हम सभों को उचित है हम निज स्वार्थ निज बड़ाई और सुख्याति को छोड़कर न्याय की रीति पर चलें और हमारा ~~यही सबकी~~ एकमात्र यही उद्देश होवे कि हम अपनी मंडली की ~~सेवा~~ सेवा मे तत्पर रहें जिससे हमारी इस मंडली से ~~ईश~~ परमेश्वर पिता की महिमा होवे और बहुतेरे ~~लोगों~~ लोग ईश्वर के राज्य में पहुंचाये जावे और मुक्ति ~~पावें~~ और अनन्त जीवन का अधिकार पावें।

पंच को अपने पैरिश में और इलाके पंच को इलाके में भारी जवाबदिही है। हम मंडली के अगुवे हैं हम इस जवाबदिही को जाने और अगुवों का गुना रखें। हम स्वार्थ-हीन होवें। यदि हम अपने लाभ और स्वार्थ और मतलब निकालने को मंडली का अगुवा बनें तो हमारा काम असफल होगा, उससे केवल हानि और नुकसानी होगी। परन्तु जब हम स्वार्थ त्याग कर केवल ईश्वर की इच्छा खोजें और मंडली की भलाई और लाभ पर दृष्टि करें और चिन्ता करें तो निश्चय हमारा अगुवापन सिद्ध ~~सफल~~ होगा और तबही कलीशा की उन्नति होगी।

इसलिये हम जो मंडली के अगुवे हैं हम सभों को उचित है कि हम निज स्वार्थ, निज बड़ाई और निज सुख्याति को छोड़कर न्याय की रीति पर चलें और हमारा एकमात्र यही उद्देश्य होवे कि हम अपनी मंडली की सेवा में तत्पर रहें जिस्से हमारी मंडली से परमेश्वर पिता की महिमा होवे और उसके द्वारा बहुतेरे ~~लोगों~~ लोग ~~ईश्वर~~ उसके के राज्य में पहुंचाये जावें और मुक्ति और अनन्त जीवन का अधिकार पावें।

कमिटी की सिफारिशें। सर्व सम्मति से

हम इस वर्तमान स्थिति में ~~सिफा~~ सिफारिश करते हैं कि बेर्लिन बोर्ड मिशन डाईरेक्टर, जे. ह्लोश ~~को~~, विशेष काम के निमित्त ~~लिये~~ गोस्सनर कलीशिया में ~~कोई~~ पांच वर्ष तक काम करने के लिये भेजे।

/ कि उनका स्थान कलीशिया में ऐसा होवे जो कि नियमावली के अनुसार या उसके भीतर हो और उनको ऐसा स्थान दिया जावे जिससे कि कलीशिया के उनको बुलाने का पूरा ~~[illegible]~~ अभिप्राय सिद्ध हो।

इसकारण हम सिफारिश करते हैं कि महासभा ~~उनको~~ उनको उपरोक्त समय के लिये कलीशिया का प्रेसिडेन्ट होने को बुलावे। और वह आत्मिक अगुवा होकर जो वर्तमान कठिनाईयों के हल करने को विशेषरूप से भेजा गया हो, चर्च कौंसिल और महासभा के ~~चेयरमैन~~ प्रेसिडेन्ट के साधारण अधिकार से अधिक अधिकार रखे। ~~उनको~~ यह अधिकार उनको होवे कि वे चर्च कौंसिल और महासभा के सामने किसी विषय के अपने ~~ख्याल~~ विचार को जिसको वे अधिक आवश्यकता समझें रख सकें॥

कि उनको बाहर की संस्थाओं के साथ लिखापढ़ी करने का पूरा अधिकार होवे और उनको इस काम के लिये आवश्यकता से कलीशिया की संस्थाओं के संकल्पों की अपेक्षा करना न पड़े।

Delegates for the Mahasabha, 1937.

---------oOo---------

1. Govindpur Ilaka.

1. Rev. Luther Ekka
2. " Christochit Guria
3. " Daud Soreng
4. " Johan Toppo
5. Babu Jaymasih Topono
6. " Suleman Barla
7. " Christochit Topono
8. " Patras Hemrom
9. " Prabhusahay Vengra
10. " Habil Topono
11. " Yusaph Kongari
12. Cand. Lukas Topono
13. Miss I. Storim

2. Lohardaga Ilaka.

1. Rev. J.J.P. Tiga
2. " Christ Maghan Lakra
3. " Nathaniel Khalkho
4. Babu Immanuel Khalkho
5. " Prabhusahay Tiga
6. " Ishwar Datt Lakra

3. Takarma Ilaka.

1. Rev. Suleman Kula
2. " Nathaniel Bage
3. " Daniel Horo
4. Babu J. Dang
5. " J. Bhengra
6. " P.S. Aind
7. " P.D. Surin
8. " M. Dang
9. " N. Tuti
10. Miss A. Fritz
11. " Smith

4. Koronjo Ilaka.

1. Rev. Suleman Bage
2. " Obed Tiru
3. Babu Saban Topono
4. " Manmasih Bage
5. " Mansidh Surin
6. " Patras Baba
7. " Benjamin Baba
8. " Yusaph Topono
9. " Mansidh Dang
10. " Samuel Samad

5. Khutitoly Ilaka.

1. Rev. Lukas Topono
2. " Christanand Minz
3. Babu Amus Kerketta
4. " Johan Topono
5. " Elias Ekka
6. " Junathan Lakra.

6. Rajgangpur Ilaka.

1. Rev. F. Schulze
2. " Eliazar Ekka
3. " Prabhusahay Horo
4. " Johan Topono
5. Babu Anandmasih Tirkey
6. " Anandkumar Dhanwar
7. " Modmasih Minz
8. " P.S. Bage

7. Kinkel Ilaka Jashpur.

1. Rev. M. Schiebe
2. " Laurentius Lakra
3. Babu Daud Minz
4. " Mangaldas Lakra

Substitutes.

I. Babu Asaph Tirkey
II. " Patras Soreng

8. Karimatti Ilaka.

1. Rev. B. Minz
2. Babu Nuas Guria
3. " M.P. Tirkey
4. " Kalyan Surin
5. " Johan Jojo

9. Kondra Ilaka.

1. Babu Johan Toppo
   Substitute Yusaph Toppo

10. Jamshedpur Ilaka.

1. Rev. L. Jojowar
2. Babu A.P. Topono

11. Tamar Ilaka.

1. Rev. Johan Bhengra
2. " Markas Sanga
3. Babu Samuel Kandir
4. " Nirmal Vengra

Visitors.

Abiraham Mundu
Paulus Kasmar

12. Jarakudar Ilaka.

1. Rev. Luther Bagraila
2. " Masihdas Lakra
3. Babu Prabhudayal Dhan
4. " Yusaph Kongari

13. Assam.

1. Rev. Abraham Topono
2. " Suleman Sarkar
3. Babu Prabhusahay Mundu

14. Purulia Ilaka.

1. Rev; P.C. Punoria

15. Chaibassa Ilaka

1. Rev. C.K. Bhengra
2. Mr. C.K. Kongari

16. Chainpur Ilaka.

1. Rev. Dhankumar Toppo
2. " Immanuel Kujur
3. " Jaymasih Minz
4. Babu Masihprakash Bek
5. " Johan Kerketta

17. Gumla Ilaka

1. Rev. U.E. Kujur
2. Babu Christ Mikhael Minz

18. Kinkel Ilaka.

1. Rev. Samuel Bage
2. " Samuel Tirkey
3. " Johan Kujur
4. Babu A. Kujur or P.S.Kachchhap or A. Kujur.

19. Burju Ilaka.

1. Rev. Mansidh Purti
2. " Mansukh Tuti
3. " Nathaniel Mundu
4. " Daud Kerketta
5. " Christ Kalyan Guria
6. " Mansukh Manki
7. Babu Barnabas Soy
8. " Abiraham Horo
9. " Santosh Horo
10. " Mansidh Bading
11. " Samuel Lomeya
12. " Junathan Baraiud
13. Cand.Luther Kongari.

20. Ranchi Ilaka.

1. Rev. Isahak Ekka
2. " Manmasih Toppo
3. " Laurentius Ekka
4. " Amus Bara
5. " Immanuel Lakra
6. Babu Prabhudayal Kujur
7. " Jusaph Lakra
8. " Mahendra Khess
9. " Naeman Toppo
10. " Johan Sisingi
11. Cand.Sudarshan Lakra
12. " Hanukh Minz
13 " J. Barla.

21. Singhani Ilaka.

1. Rev. Andrias Topono
2. Bu Samuel Hemrom

सम्पति विभाग का रिपोर्ट ।

मुझे सम्पति विभाग का मुख्य होकर महासभा को सम्पति के विषय उनके Management और आमदनी का रिपोर्ट देना निश्चय बहुत आवश्यक है पर मैं अधिक खेद के साथ अपनी असमर्थता महा सभा को जनाता हूं।

मैंने जब से नई कौंसिल में जायदाद विभाग के लिये एक कमिटी ठहराई गई और मैं उसका मुख्य नियुक्त किया गया तब से ~~चेष्टा कि~~ जानने की चेष्टा किया कि हमारा जायदाद कितना है और कौन२ जायदाद बोर्ड आफ ट्रस्टीज के जिम्मे है और कौन२ मंडली या कौंसिल के जिम्मे है और इसका ~~Managem~~ ~~म~~ Management किसके द्वारा और ~~द~~ किस प्रकार से होना चाहिये। पर इसका पता नहीं मिला। ~~मुझे~~ अब तक भी जायदाद सम्बन्धी कोई कागज भी नहीं देखने में आया है। मैंने ~~भूतपूर्व~~ इस सम्पति विभाग के मुख्य मि० पुर्ती से भी इसका ज्ञान पाने को कई बार कोशिश किया पर ~~उन्होंने भी मुझे नहीं~~ वे भी मुझे नहीं बतला सके कि प्रबन्ध किस प्रकार का है। मुझे इतने दिनों के अनुभव से यह स्पष्ट हुआ कि ~~मैं~~ हमारे जायदाद के ~~म~~ management का सुप्रबन्ध नहीं है और जिसके कारण हानि और नुकसानी भी होती है। हमारे कितने स्थानों की जमीन हमने खो दिया है ~~जैसे खूंटी~~ और उचित निगरानी ~~नहीं हो सकने के द्वारा~~ और चिन्ता न हो सकने के कारण खराबी भी हो रही है उनसे हमको अधिक आमदनी होवे इसका सुप्रबन्ध नहीं हो रहा है। कितने जगह की हमारी जायदाद ऐसी हो गयी है मानो वे हमारी जायदाद नहीं हैं।

यदि हम अपनी जायदाद को रखना चाहते हैं उनसे अधिक आमदनी लेना चाहते हैं तो हमको उसके रखने और व्यवहार

Church Counc
Received 23.3.37.
Register No. 591
Date 23.3.37
File 51.
Reply No.........
Date.............

Reporto of the Head Supervisor, Lutheran Schools.

April, 1937.

Dekha jata hain ki pratiek Mission apni Mission Khetr men apne Khristan logon ke liye anek chhote ya bare bare schoolon ko khola hain aur un schoolon ko kholne ka matlab yahi hai ki Khristani Dharam aur Ishwariya dar khristan logon ke Hriday men jar pakar lewe ki we pucce aur sacche Khristan banen. Ishwar ka dhanyabad howe ki hamari mission ne hamare bich men bhi anek schoolon ko khol diya tha aur ye school hamare bich men aur hamare desh men Ishwar ki Swargiye Jyoti ko prakash kar rahi hain. Jadi kisi mission ke school na hote to us mission ka kam utna saphalwant kabhi nahin ho sakta hai.

Head Supervisor ke dekhbhal men abhi 6 M. E. 17 U. P. aur 118 L.P. school hain, in men se Ranchi jile ke kitne school abhi Ranchi D.B. se sambhale jate hain.

In Schoolon ke liye 136 purush master and 27 mistress log hain aur Middle schoolon men..... 685 larke aur 86 larkiyan parhti
Primary ,, ,,.....3486 ,, 1338 ,, ,,

Bite M. S. C. pariksha men 108 larke aur 28 larkiyan
in men jo pass huye {93 / 77 E. larke {21 / 12 E. larkiyan

Primary School. Ranchi jile ke primary school jo Ranchi D.B. se sambhale jate hain un men se bite sal 11 schoolon ko sarkar ka stipend nahin milta hai aur uska karan yah ki D.B. Board ko Sarkar se jo grant milta tha so kam huwa. Sarkar har sal in schoolon ke liye grant ko kam karte jata hai yah bichar kar ki ek hi panthwale prajaon par kyon munhdekhi kiya jawe. Sarkar ko to chahiye ki apne sab prajaon ko ek hi saman dekhe. So wah grant ko kam karte jata hai aur ho bhi sakega ki wah kuchh barason ke bad apna sab grant ko band kar dega aur tab to in sab schoolon ko sambhalne ka bhar hamari hi Mandli ko hogi. Bartman samay par ki mandli ki dasha ko dekhne se malum hota hai ki jadi isi samay Sarkar apne sab grant ko band kar dega to in schoolon ko hamari mandli kabhi sambhal nahin sakegi. Ye sab ke sab praya tut jaenge aur tab to hamari mandli ke liye apne logon ke bich dharam ki Jyoti ko phaelane ke anek dwar band ho jaenge. So jisten ki ye school barabar ke liye chalte rahe ham unko bilkul riti se abhi hi mare turant D.B. ko jima kar dewe. kyonki D.B. hamare schoolon ko chalane ke liye juda khajana rakhta hai aur apne Board ke schoolon ko chalane ke dusra khajana. Jadi sab schoolon ko chalane ke liye uska ek hi khajana rahega to sab school ek hi khajane se chalaye jaenge. So hamari arji Mahasabha se yahi hai ki isi mahasabha ki baithki men ek Resolution pass kiya jay ki hamare Primary school jo abhi D.B. se sambhale ja rahe hain bilkul riti se D.B. ko de diye jayen.

D III

Middle Schools. Middle School bhi bari kathinta se abhi chalaye ja rahe hain. Bare anand ki bat hai ki M.E. schoolon men ab bidyarthi barh rahe hain. Is sal to aur bhi kuchh beshi ho gaye hain. In M. E. schoolon ke liye jadi Mandli uchit kharcha dewe to we aur bhi barhenge aur anek larke aur larkiyan M.E. pass karenge. Bahut anand ki bat hai Sarkar ab larkon ke M. E. Schoolon men Larkiyon ko bhi sikhne deta hai. Jadi Sarkar ki yah anumati na hoti to Bethesda M.E. School men in sab larkiyon ke liye jagah nahin hoti.

So jab in M. E. Schoolon se mandli ke logon ke liye itni bhalai ho rahi hai to uchit hai unko chalane ka prabandh bartman Mahasabha thik se kar dewe. In ko chalane ki kathinta kya hai ? Kathinta hai inko sambhale rakhne ka kharach. Sarkar ka hukum hai ki unko chalane ke liye kitna kitna kharach jarur karna chahiye. Sarkar ke niyam ke anusar inko chalane ka kharach hamare pas nahin hai-- arthat jitna rupaiya chahiye utna rupaiya ham ko nahin milta hai-- Sarkar ka hukum hai ki jadi uske thahraye anusar un ke liye ham kharach nahin karenge to wah bhi--Sarkar-- apna Grant nahin dega. Jadi ham utna kharach nahin karenge aur Sarkar bhi apne grant ko band kar dega to hamare sab M.E. turant hi band ho jaenge aur tab to hamare larke aur larkiyan kahan

Middle sikhenge ?

Bite sal ke July mahine se Church Council ne thahraya ki pratiek Ilaka apne 2 schoolon ko chalane ke liye kuchh 2 apni amdani se dewe. Ilakaon ko C.C. ke pas apni amdani ka 20 % bhejna hai. Par kya dekha jata hai ? Ilaka na to C.C. ke pas apne 20 % ko bhejta hai na to us 20 % ko apne schoolon ko deta hai. C.C. to rupaiya kahan se pawega-- C. C. ka khajana hai Ilakaon ki amdani--- . Hamare log Bilaiti hi Bilait, Bilaiti hi Bilait par najar karte hain. Bilait se jitna C.C. ko mil raha hai utna to C.C. de rahi hai par uske upar bhi schoolon ko aur rupaiye ka darkar hai. So Mahasabha jane ki jadi in schoolon ke liye ham uchit kharach Sarkar ke niyam anusar na karenge to ye turant tut jaenge. So in M. E.ke liye bhi Mahasabha isi baithki men thik 2 prabandh kar dewe ki unko kis prakar kharach mil sakega.

Yah bat to sach hai ki hamare mandli ke karmchariyon ko uchit talap nahin milta hai aur aisa malum hota hai ki hamare karmchariyon ka janm isi liye huwa hai ki unko janm bhar ke liye dukh bhogna howe-- arthat mandliyon se unko yathochit talap na mile--- Kya aisa hi hona chahiye ? kabhi nahin. Ye karmchari jab unko uchit talap nahin milta hai to kahte hain ki ham ghati sahte hain to school bhi waisa hi ghati sahe aur is liye school ka jo den mandli ko hai usko dene ke liye utna phikr nahin karte hain. Hamare bhai log bhi school to chahte hain par us ke liye kharach dene nahin chahte hain. Mandliyon ko chalane hare karmchari to ghati sahte hain par school ke masteron ke liye to Sarkar ka Jabar hukum hai ki unke liye awashya kharach hona chahiye-- To ham masteron ko ghati sahne bolenge ki Sarkar ke hukum ko manen-- Par priya Mahasabha ham Sarkar ke hukum ko manen aur hamara sab school chalte rahe aur iske liye abhi isi baithki men Mahasabha intijam kar dewe-- agar nahin to yah bhi phaesla ho jawe ki kharach ki ghati se hamare sab school utha diye jawen.

Church Council ne pratiek Ilake ke liye thora 2 den apne schoolon ko chalane ke liye thahraya hai. Jadi isi thore ko harek Ilaka diya karega to hamare sab school uchit riti se chal sakega par jadi utna bhi ham karne ko koshish nahin karenge to achha hoga ki ham unko rakhen bhi nahin.

So hamari arji Mahasabha se yahi hai ki ek phaesla to jarur ho jawe-- arthat schoolon ko ham rakhen ki nahin-- jadi rakhne ki phaesla howega to unko chalane ka bhi thik 2 prabandh hojawe.

Ranchi, the 23rd March ,1937.

N. Ezy

Head Supervisor,
Lutheran Schools, Ranchi.

Memo No 458
Of- March 23, 1937.

Submitted to C.C. for information.

N. Ezy
H. Supr.

(III) What ~~men~~ the school Hd master be
~~both~~ supervisor be prime hai ✓

(IV) All schools should be under
the Principal of the H.E. school.

HA supervisor should not be
the Head of the Belhirda ~~school~~
school

(V) Lady Supervisor to be appointed
for girls schools.

छोटानागपुर की गोस्सनर कलीशा के C.C. सेक्रेटरी को
योग्य सहाय।

महाशय,

नीचे लिखित प्रस्ताव आगामी मण्डली महासभा के लिये रांची इलाका पंच की ओर से भेजा जाता है।

“हमारी कलीशा की महासभा में लेमैन प्रतिनिधियों की संख्या कर्म्मचारियों की संख्या से बहुत ही कम है इसलिये प्रस्ताव किया जाता है कि आगे लेमैन प्रतिनिधियों की संख्या महासभा में और अधिक होवे।”

[illegible]
8/4/37
Secretary Ranchi
Ilaka Panch.

Delegates ~~of~~ for the Mahasabha
1937

1 Govindpur Ilaka.

1. Rev. Luther Ekka.
2. " Christo chit Guria.
3. " Daud Soreng
4. " Yohan Toppo.
5. Babu Jaymasih Topono.
6. " Suleman Barla.
7. " Christochit Topono
8. " Patras Hemrom.
9. " Prabhusahay Vengra.
10. " Halil Topono.
11. " Yusaph Kongari.
12. Cand. Lukas Topono.
13. Miss I. Sterim.

2. Lohardaga Ilaka

1. Rev. J.J.P. Tiga.
2. " K.M. Lakra.
3. " N. Khalkho
4. Mr. Immanuel Khalkho.
5. " Prabhusahay Tiga.
6. " Iswar Dutt. Lakra.

3. Takarma Ilaka.

1. Rev. S. Kula.
2. " N. Bage

Takarma Ilaka Contd.

3. Rev. Daniel Horo.
4. Babu J. Vengra.
5. " J. Dang.
6. " P.S. Aind.
7. " P.D. Surin.
8. " M. Dang.
9. " K. Tuti.
10. Miss A.F. Fritze.
11. " Smith.

4 Koronjo ~~Burju~~ Ilaka

1. Rev. Suleman Bage
2. " Obed Tiru.
3. Babu Salan Topono.
4. " Manmasih Bage.
5. " Mansidh Surin.
6. " Patras Bala.
7. " Benjamin Bala
8. " Yusaph Topono.
9. " Mansidh Dang.
10. " Samuel Samad.

5 Khutitoli ~~Kuntal~~ Ilaka

1. Rev. Lukas Topono.
2. " Christanand Hinz

Khuntitoli Ilaka Contd.

3. Babu Amus Kerketta
4. " Johan Topno.
5. " Ilias Ekka.
6. " Jonathan Lakra.

6 Rajgangpur Ilaka

1. Rev. Iliazar Ekka.
2. " Prabhusahay Horo
3. " Johan Topno
4. Babu Anandmasih Tirkey +
5. " Anandkumar Dhanwar +
6. " Modmasih Minz. +
7. Rev F ~~Schultze~~. Missionary.

7 Kinkel Ilaka. Jashpur

1. Rev. M. Schiele.
2. " L. Lakra.
3. Babu David Minz.
4. " Mangaldas Lakra

Substitute

I Asaph Tirkey
II Patras Soreng.

8 Karimati Ilaka

1. Rev. B. Minz.
2. Babu Nuas Garia.
3. " M. P. Tirkey
4. " Kalyan Surin.
5. " Johan Jojo

9 Kondra Ilaka

1. Johan Toppo

Substitute

Yusaph Toppo

10 Jamshedpur Ilaka

1. Rev. L. Jojowar
2. Mr. A. P. Topno.

11. Tamar Ilaka

1. Rev. Johan Vengra
2. " Markas Sanga
3. Babu Samuel Kandir
4. Babu Nirmal Vengra

Visitors

Abraham Munda
Paulus Kasmar.

12 Jorabandh Ilaka

1. Rev. L. Baghraila.
2. Rev. M. D. Lakra
3. Prabhudayal Dhan
4. Yusaph Kongari.

13 Assam

1. Rev. Abraham Topno.
2. Rev. Suleman Sarkar
3. Babu Prabhusahay Munda

14 Purulia Ilaka

1. Rev. P.C. Punoria.
2. ~~Mr. H. Panna.~~ X

15 Chaibaosa Ilaka

1. Rev. C.K. Vengra.
2. Mr. C.K. Kongari. X

16 Chainpur Ilaka

1. Br. Masihprakash Bek.
2. " Johan Kerketta.
3. Rev. D.K. Toppo
4. " I Kujur
5. Rev. ~~Jaymasih~~ Minz.

Gumla-Ilaka

1 Rev. E.E. Kujur.
2 Br. Christ Michael Minz.

Kinkel Ilaka

1. Rev. S. Bage
2. " S. Tirkey
3. " J.A. Kujur
4 Br. A. Kujur or ~~Johan Kindo~~
5 Br. P.S. Kachhap or " A. Kujur.

Burju Ilaka

1. Rev. Mansidh Purti
2. " Mansukh Tuti
3. " Nathaniel Munda
4. " Daud Kerketta
5. " Christ Kalyan Guria
6 " Mansukh Manki
7 Br. Barnabas Soy
8 " Abraham Horo
9 " Santosh "
10 " Mansidh Bading
11 " Samuel Romeya
12 " Yunathan Baraiyu
13 Cand. Luther ~~Cand~~ Kong

Visitor Mr. N. Soy (A Su

Ranchi Ilaka

1. Rev. ~~I. Ekka.~~ Isahak Ekka
2. " ~~M. Toppo~~ Manmasih
3. " ~~L. Bara.~~ Laurentius Ekka
4. " Amus Bara.
5. " ~~I. Lakra~~ Immanuel
6. Br. Prabhudayal Kujur
7 " Yusaph Lakra
8. " Mahendra Khess
9 " Naeman Toppo
10 " Yohan Sisingi
11 Cand. Sudarsan Lakra
12 " Hanukh Minz.

To,

The Secretary G.E.L. Church
Ranchi

महाशय,

हम नीचे लिखे हुए लोग महासभा में भिजिटर होने चाहते हैं, सो कृपा करके भिजिटर ग्रहण कीजिये।

Mrs. M. Horo
" Ph. Sisingi
" M. Topono
" M. Sihan
" S. Toppo
" F. Kongari
" S. Mali
" H. Tirkey
" Ph. Lakra
" M. Rujur
Miss Sh. Tirkey

No. ....

GOSSNER HIGH SCHOOL.

From

THE PRINCIPAL

Gossner High School.

To

The Secretary,

G.E.L.Church Council,

Chota Nagpur & Assam,

Ranchi.

Ranchi, B. N. Ry.,

(Bihar)

The 10th April 1937.

Sir,

I have the honour to send the names of the delegates of the Gossner High School, Ranchi, for the ensuing Mahasabha of the Church. Kindly accept the names:-

1. Mr. Martin Bhengra.
2. Mr. Zachariah Purti.

The delegation fee of Rs.10/- (ten) only for the two delegates is sent herewith.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

Dr. O. Waltz

Principal.

To

The Secretary
Lutheran Church Ranchi.

Honour Sir,

We the teachers of the L.P. School staff are anxious to attend Mahasava.

There fore kindly allow us to become the visitors of the "Mahasava."

We remain
Sir.
Your most obdt. Servants.

[illegible]
L. Bara
Michael Khalkho
Tirkey. Ekka
Nicholas-Kuju
J. Kujur

78/37/F.-29. 8 April, 29.

Mr. P. Hurad,
Entally,
Calcutta.

Dear Mr. Hurad,

In connection with your appeal to the Mahasabha against the decision of the Church Council regarding Secretary's quarters, I beg to inform you that the appeal has been included in the Agenda of the Mahasabha and it will be taken up on the 14th April, 1937.

Yours sincerely,

[signature]

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NINE PIES

RANCHI DELY. 1 APR. 37 A.M.

J. D. Kandulna Secretary

Church Council

G. E. L. Church Compd

Ranchi

B. N. Ry

Chaibassa
31. 3. 37.

Manyawar Secy. P. D. Kandulna,
Ap ko mera yishunsahay.
Kripa karke maph kijiye
ki main suisamay men
Pratinidhion ka nam nahin
bhej saka. Main lagatar
tour men tha jisse jaldi
sabha nahin baith sake.
Pratinidhi jo mahasabha men
jaenge so ye hain.
(1) Rev. C. K. Bhengra
(2) Mr. C. K. Konguri
Dy. Magistrate

Shubh
C. K. Bhengra

POST CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

To

Mr P. D. Kandulna
Secretary of the C.C.
Ranchi
Lutheran Church
Lutheran Compound
Ranchi B. N. Ry.

Purulia, G. E. L. Compound
Dated the 31st March 1937.

To the Secretary of G.E. Lutheran Church
Ranchi.

Mr. P. D. Kandulna.

Herewith I am sending the names of the Pratinidhis in the Maha sabha Ranchi Lutheran Church from the Ilaka of Purulia Manbhum.
As follows:–

1. Rev. P. C. Purnoria
2. Mr. Theodor Panna.

yours faithfully
P. C. Purnoria.

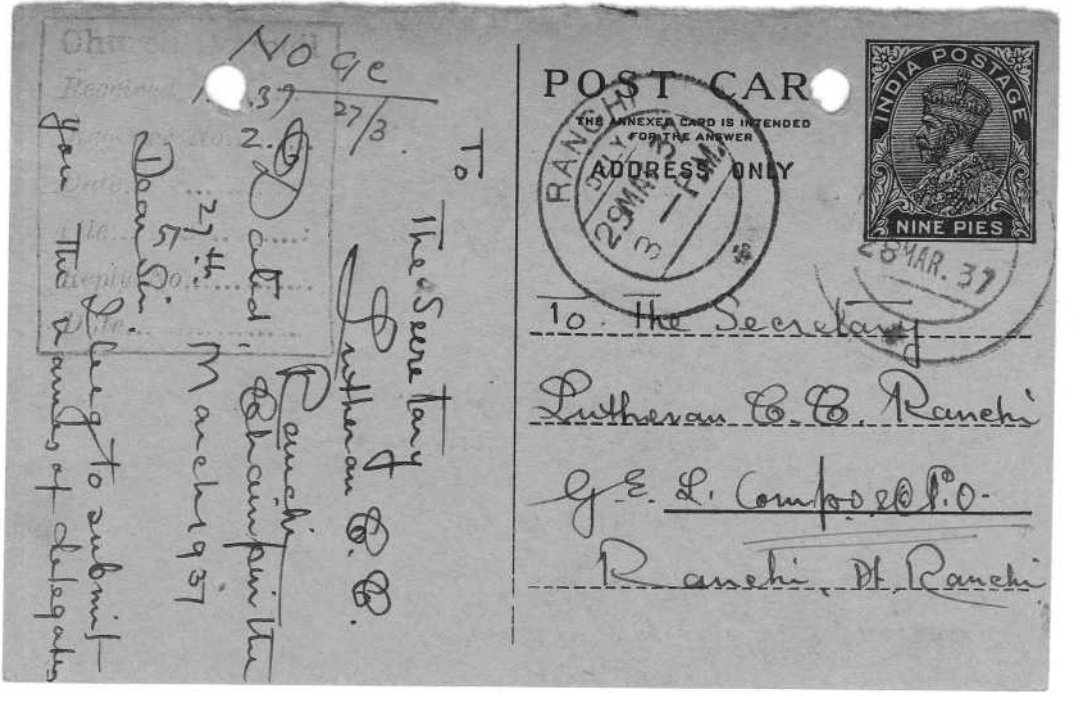

POST CARD

THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NINE PIES

RANCHI 29 MAR 37 3 P.M.

28 MAR. 37

To The Secretary
Lutheran C. C. Ranchi
G. E. L. Compound P.O.
Ranchi, Dt. Ranchi

No 9e 27/3

Received 1.3.37

2.4 Dated 27th 5th

To
The Secretary
Lutheran C. C.
Ranchi

Chaibasa 27th March 1937

Dear Sir,
We beg to submit you the names of delegates

of the Chainpur diocese for
the ensuing Mahasabha,
kindly acknowledge the recept
of the same.

First delegate -1 Masih Prakash Bek
vil. Kuri

Second " -2 Johan Kerketta
vil. Keinta.

Only 2 delegates and more
than this 2 Pastors -

3. Rev. D.K. Toppo - Chairman
4. " D. Kujur.

There is one pension holder
Rev. J. Minj I am not sure
whether he goes up there or not.

File in the
Mahasabha File

Yours Sincerely
P. Beck

31/3 [signature]

A. P. Topono.
Secretary
G.E.L. Parish Committee
Jamshedpur

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE
NINE PIES

JAMSHEDPUR

P. Kandulna Esqr.
Secy. G.E.L. Church Council
G.E.L. Church Compd.
Church Road
Ranchi.
B. N. Ry.

Jamshedpur
D. 7.3.37

The Secretary,
G. E. L. Church Council
Ranchi.

Dear Sir,

As per minutes of the meeting of Lutheran Parish Committee held on 27.2.37, Rev L. Jojowar and Mr. A. P. Topono are being deputed to attend the meeting of the Lutheran people Mahasabha of 1937.

This is for your information

Yours Sincly

POST CARD

~~REPLY.~~

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NINE PIES

28 FEB 37
11 — A.M.

Mr. P. D. Kandulna
Secretary
G. E. L. Church
Ranchi
B. N. Ry

Received 27.2.37
No. 563
Dated 18.2.37
File 57
Reply No. ....
Date ....

Jorabandh
25. 2. 37

Shrijukt Manyawar Secy
Sahib S D Kandulna apki
Jishusahay.

Main saphar men tha
isse apke khat ka
jabab jaldi nahin diya.
so kripaya maph karenge
Mere Jarkundar ilaka se
Ranchi Deligate nimn
likhit hain.

1. Rev. L Bagraila
2. Rev. M W Lakra
3. Sabhudayal Dhar
Brachari
4. Jusaph Hingari.

ki. sh.
Apka agyadhin
L Bagraila

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NINE PIES

RANCHI DELY. 17 MAR 37

Mr J. Kandulnai

G. E. L. Church Secy.

Ranchi

Athbesa
16 3-37

मान्यवर गो॰ ए॰ लूथेरान-चार्च सेक्रे॰ साहब-को योशुसहाय महाशय,

आप को, जनाया-जाता है कि तमाड़ इलाका-सभाने अपने इलाके से निम्न लिखित जनों को महासभा के वास्ते डेलीगेट व विजिटर चुन लिये हैं अर्थात :- बाबु सम्पुरन कोंगाड़ी व निर्मल भेंगरा डेलीगेट चुने गये हैं तथा अब्राहाम मुन्डू सिदरीहुड़ंग व पौलुस कच्छप विजिटर चुने गये हैं।

इलाका सेक्रे॰

Nirmal Bhengra

POST CARD

ADDRESS ONLY

RANCHI DELY. 31 MAR 37 3 P.M.

RANCHI 29 MAR 37 SIMDEGA

Mr. P. J. Kandulna

Secretary, G.E.L.C.

Lutheran Compound

Ranchi

Khuntitoli 29.2.37

Secretary, G.E.L.C. Ranchi

मा० महाराज आप को यीशुसहाय.

आप का P.C. मिली. महासभा के लिये बाकी दो प्रतिनिधियों का नाम भेजता हूं।

1, इलियस हन्ना कुसकेला ।

2, प्रानधान लकड़ा, कुलुकेरा ।

आप का आज्ञाधीन

[illegible].

N.B.
इस बरस प्रतिनिधियों के रहने को खाने का कैसा प्रबन्ध किया गया है। मेहरबानी करके बताइये।

Khutitoli 11.3.37

To the Sec. G.E.L. Church

मा० महाराज

१ १९३६ का. खुटीटोली इलाके जन संख्या. पत्र आप की सेवा में भेज देता हूं।

२ आने वाली महासभा के लिये प्रतिनिधि खुटीटोली इलाका ।

१ मा० लूकस तोपनो

२ मा० खृस्तानन्द मिंज

३ प्रा० आमुस केरकेटा इलाका पंच } 1

४ योहन ~~[illegible]~~ तोपनो इलाका पंच }

आप का आज्ञाधीन

L. Topno.

3509

Ichha h[illegible]e to pichhle
dinong men pahunch jaunga
age shubh

Apka Agyadhin
Sewak,
C. K. Kuria

Pastor in
charge of Tokad
Parish.
1-4-37

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE
NINE PIES

11 A.M.
6 APR. 37

RANCHI

To

The Secretary C. C.

Lutheran Church –

Compound Ranchi

To

The Secretary C. C. Ranchi.

Manniy Mahashay,

Ap ko mera bahut 2 Yishusahay howe.

Ap ko aur sari Mahasabha ko malum howe ki meri dharm patni jorse bimar pari hai. Naya janm ke dukhse to koi prakar se par ho gai hai, (25-3-37) par pichhla dukh unko jorse ho gaya hai, mera bina unko uthna baithna muskil hai. Aisi halat men mujhe Mahasabha men hajir hona bahut hi kathin bujhata hai. So meri arji hai ki Mahasabha Kripa kar mujhe maph karangi.

Kripa karke mera updesh aur Prarthana ke jagah par koi dusra jan thahra diya jay. Agar Prabhu ki

3.4.37
10.
2.4.37
51

To

P. Kandulna.
Church Council Secy.
G.E.L. Compt
Ranchi.

Burju
2-4-37.

Mahashay,

C.C. Secy ko
Vishwas [illegible]. Burju Ilake ke
Mahasabha ke liye Pratini-
dhion ka nam bheja jata hai.
Kripa kar grahan kijiye.

1. Rev Mansidh Purti
2 " Mansukh Tuti
3 " Nathaniel Munda
4 " Daud Kerketa
5 " Christkalyan Guria.
6 " Mansukh Mankí
7 Cand. Luther Kongari.
8 Babu Barnabas Soy.
9 " Abiraham Horo Inmaster.
10 " Santosh "
11 " Mansidh Badingi
12 " Samuel Lomga
13 " Yunithan Baraeud.

Visitor. Ilaka Organiser
Mr. N. Soy

Apka Bishwasi
M. Purti.

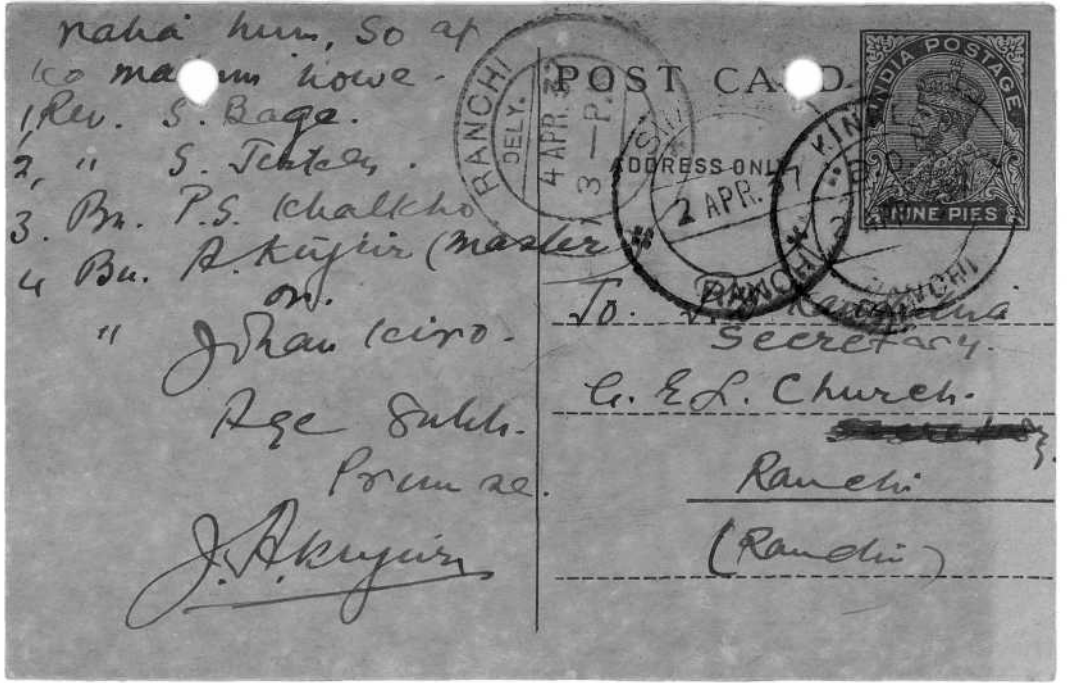

naha hum, So ap
ko malum howe.
1 Rev. S. Baga.
2, " S. Tete.
3. Br. P.S. Khalkho
4 Br. A. Kujur (master
on.
" Johan Kiro.
Age Sukh.
Prem se.

J. A. Kujur

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NINE PIES

RANCHI DELY. 4 APR. 37 3-P.

RANCHI 2 APR. 37

To. [illegible]
Secretary.
G. E. L. Church.
~~[illegible]~~
Ranchi
(Ranchi)

Khunteel.
[illegible]-4-37.

5.4.37
13
1.4.37
57

To
The Secretary.
G.E.L. Church, Ranchi.

Dear Sir,

Main Mahasabha ke liye pratinidhi ka nam bhej deta hun. Sabha men M.E. School ka ek Master chuna gaya. Yadi uske liye chhutti na mile to uske badle men dusra chuna gaya hai So main do ke jage men ~~[illegible]~~ tin namon ko abhi [illegible] bhej

8/4/37

Gaui
5th April 37

Secretary. Babu I am going to inform you that I am unable to attend the meeting of the 8th and parhaps the Mahasabha, as I have got most urgent bussiness about my landed property. Please excuse my absence If possible I will try to attend the Mahasabha.

yours —
D Tikey

Mr P. D. Kaurulua
Secretary Church Council
Ranchi

Extracts from the Minute of the Singhani Elaka Panch.

आज तारिख १३.३.३७ को निम्नांकित डेलीगेट रांची महासभा में बैठने के लिये चुने गये।

1. Rev. A. Topno.
2. Samuel Hemrom Jalla
Substitute — Matias Singh

Chairman, Secretary
Sd Y. Horo, Sd P. Lakra

Treasurer
A. D. Topno.
6.4.37.

एक कोपी भेजा गया है।
A. D. Topno.

Kondra

Manyawar,

Secretary Sahib ko

mera bahut 2 yishu sahay: Kushal mangal achha hai aur apki bhi yahi asha hai.

I main maha Sabha ke delegeton ka nam likh bhejta hun. Jo Ilake se chune gaye hain:—

Rev. L Lakra. Kondra /
I Daud ming. Galonda /
II Johan Toppo Hathabhauri /
Substitute III Asaph Tirkey Barojharnija } /
IV Jusaph Toppo Baghonda }.

Karimati
7. 3. 37.

Secy
G E L C C

Dear Sir,

The following have been elected delegates to the forthcoming General Conference.

1. Nuas Guria
2. M. P. Tirkey
3. Kalyan Guria
4. Johan Tojo.

5. Rev. B. Minz.

Yours sincerely
B. Minz.

12

Gumla 1. 4. 1937

Secretary sahib ko mera yishusahay.

Ap maph karenge ki bahut der huwi jin ke aneko karan hain.

Main Gumla Ilake ka Khajana hisab Khajanchi ko bheja aur Mardum sumary apko bhejta hun; aur us ke sath yah agami Maha sabha ke liye deligates list

(i) Rev. U. E. Kujur

(ii) Cate. Christ Mikhael Minz

yours faithfully

U. E. Kujur

Ilaka Chairman

Lutheran Church
Koronjo.
12-3-1937

Manyawar Church Council
Secretaryko yishusahay.

Ap ko 1937 ke mahasabha ke liye Koronjo Ilaka ke Pratinidhion ke nam bheje jate hain.

1, Rev. Suleman Bage
2, Rev. Obed Tiru
3. Headmaster Saban Topono.
4. Pracharak. Manmasih Bage.
5. " Mansidh Surin
6 " Patrus Baba.
7 Babu, Benjamin Baba.
8 " Yusaph Topono
9 " Mansidh Dang
10 " Samuel Samad.

नोट:- एक नाम ज्यादा भेजा जाता है
किसी एक प्रतिनिधी के
रोक टोक हो जाने पर।
Rev. S. Bage

Apka Sewak.
Rev. S. Bage

Rajgangpur
17-3-37.

मान्यवर सेक्रेटरी साहब C.C को पीयुसहाय,

राजगांगपुर इलाकेसे रांची महासभा के लिये निम्न लिखित जन इलाकेसे चुने गये है

1. पादरी इलियाजर एक्का
2. " प्रभुसहाय होरो
3. " जोहन तोपनो
4. आनन्द मसीह तिर्की, कुरमुला
5. आनन्द कुंवार धनवार, गोलेवहार
6. मास्टर मोदमसीह मिंज

E. Ekka
17-3-37.

Gomdpur.
30-3-37

मान्यवर C.C. सेक्रेटरी को इलाका का पोकुराम.
आप के पास महासभा के लिये
नीचे लिखित मेम्बर चुने जा कर के भेजे जाते हैं

Thathe 1 - Rev. Luther Ekka. ×
2 - Babu Jaymasih Topono
Marcha 3 - Rev. Ch. Guria ×
4 - Bu. Suleman Barla
Churdag 5 - Rev. Yahan Toppo ×
6 - Bu Christochit Topono
Jurdag 7 - Babu. Patras Hemrom.
Gomdpur 8 - Rev. Daud Soreng ×
9 - H.D. master. P. S. Tengra.
10 - Halil Topono
11 — Yusaph Kongari
12 - Candi Lukas Topono ✓
13 Miss J. Storin Missionary Lady.

ap ka.

M H oro
J. Secy.

Kinkel, 6 March 1937.

Dear Mr. Kandulna,

I beg to let you know that following 'Pradhindhi' were elected on the 27th.Febr. Jashpur Panchait.

Mahasabha Pradhinidhi 1937. JASHPUR ILAKA.

Rev.M.Schiebe. Rev. L. Lakra.

Babu Daud Minj ,Golanda. Babu Mangaldas Lakra.Sarhapani.

Substitutes: Asaph Tirkey, Bharojahrya.
Patras Soreng,Balwabahar.

Yours sincerely,

M. Schiebe

Jashpur Chairman.

9/4

Ghaghra
8.4.37

Priye Maanyawar Secretary
P. D. Kandulna Vishwasahay!
Hamare Parish se 2 Mahasabha
deligate 1, Babu P.S. Bage 2
mere badle. 2, Anandmasih
Tirkey. Inka nam chairman
ap ke pas forward kia hoga
agar nahin bheja hai to
kripaya nam roll men
darj kariye. Isake men
mangin hai
main bhul se binnaw hun meri
~~Ghe~~ garhaji maaph.
Rev. L. Horo.

छोटा नागपुर को गोस्सनर कलीसिया के ए. ए. सेक्रेटेरी को

यीशु सहाय।

महाशय,

नीचे लिखे महाशय गण राँची इलाका की ओर से आनेवाली मंडली महासभा के लिये प्रतिनिधि भेजे जाते हैं।

पंचसे चुने हुए मेम्बर :—

(१) बाबु प्रभुदयाल कुजुर (यदि आने में असमर्थ हों तो बाबु दयाधाम मिंज लिये जावेंगे)

(२) बाबु युसफ लकड़ा

(३) बाबु महिन्द्र खेस्स

(४) बाबु नयमन टोप्पो

(५) डा. बाबु योहन सिसिंगी

पदके हेतु राँची इलाकासे :—

(१) पादरी इसहाक एक्का

(२) ” लौरेन्तियुस एक्का

(३) ” मनमसिंह टोप्पो

(४) ” आमुस बड़ा

(५) ” इम्मानुएल लकड़ा

(६) क. सुदर्शन लकड़ा

(७) क. हनुख मिंज

[illegible signature]

8/4/37

Secretary Ranchi

Ilaka Panch.

Rev. J. J. P. Tiga B. D.

PASTOR & CHAIRMAN
G. E. L. CHURCH, LOHARDAGA.
(RANCHI, BIHAR) B. N. RY.

Church Council
Received 20.2.37
Register No. 555
Date (12.2.37)
File 87
Reply No.

LOHARDAGA

Dated the 12. 2. 1937

Dear Mr. Kandulna,

The following have been appointed delegates for the Mahasabha:

1. Rev. J. J. P. Tiga
2. " K. M. Lakra
3. " N. Khalkho
4. Mr. Immanuel Khalkho
5. " Prabhusahay Tiga
6. " Edwardatt Lakra

J. J. P. Tiga

Chairman.

Rev. J. J. P. Tiga B. D.
PASTOR & CHAIRMAN
G. E. L. CHURCH, LOHARDAGA
(RANCHI, BIHAR) B. N. RY.

LOHARDAGA 12 - 2 - 1937

Church Council
Received 20.2.37
Register No. 557
Date 12.2.37
File 12
Reply No. ....

Dear Mr Kandulna,

The following have been appointed delegates for the Mahasabha:

1. Rev. J. J. P. Tiga
2. " K. M. Lakra
3. " N. Khalkho
4. Mr. Emmanuel Khalkho
5. " Prabhudan Tiga
6. " Jatrudatt Lakra

J. J. Tiga

Chairman

Church Council
Received 1. 3. 37
Register No. 567
Date..............
File... 57.......
Reply No............
Date..............

From — Rev. S. Kula — Lassia P.O. Ranchi.

To The — Secretary. L C.C. Ranchi.

Dear Sir,

please take the necessary papers and kindly give the account staties to the Rev. Rasdick.

1. Census forme for 1936.
2. Anual account for 1936.
3. The list of the Mahasabha deligates —:

1. Rev S. Kula
2. " N. Bage
3. " D. Horo
4. Babu J. Bhengra
5. " J. Daug.
6. " P.S. Aind
7. " P.D. Surin
8. " M. Daug.
9. " N. Tuti.
10. Miss. A. J. Fritze
11. " Smith

Yours faithfully.

S. Kula

Rev.J.H.Schernat.

Church Council
Received 23.2.37
Register No. 562
Date 20.2.37
File 5/~~42~~ 7
Reply No.
Date

Tezpur, the 20th Febr.37.

Dear Mr. Kandulna,

We have ~~selected our~~ representatives for the next Mahasabha. They are: Rev. Abraham Topono, North-Lakhimpur; Rev. Suleman Sarcar, Nowgong, and Babu Prabhusahay Mundu, Borpokhri. It is not quite sure whether it will be possible for me attend this year the Mahasabha because we have an important meeting at Shillong about the same time. All the missions working in Assam are going to form the Christian Council for this Province. I have been asked by the Chhoti Sabha in November last to represent our Church.

We had a short meeting of the Chhoti Sabha in January where we also elected our representatives for the Mahasabha. There the following resolution was passed:"The parishes in Assam have become very poor. The salaries of the pastors and pracharaks have been reduced to a great extent. Therefore it will be difficulty to pay the representatives their expences. The Church Council be asked to pay the full expenditure for our represenstatives."

It was rule up to this time that the Chhoti Sabha paid half the expenditure. Now there is no money at present and,therefore, the Church is requested to pay the full charges for going and coming.

We have here a good time. Next week we shall have two Dharmsabhas, one in Tinsukia and the other in Jorhat. I shall be on tour from next week.

With kind regards,

Yours sincerely

J Schernat.

Half may be paid by [illegible] cl.

Scale Committee ki Report.

-------oOo-------

Scale Committee, jo ki Church Council se thahrai gai thi, aur jis ko hamare Kalisha ke bhin 2 bibhagon (departments) aur bhin 2 shreniyon (classes) ke karmmchariyon ke talab ko nirdist karne aur iski bridhi (increment) ko thik karne ka kam saumpa gaya tha, tarik September 1936 ko Rev: W. Radsick saheb ke Bungalow men bai thi. Sab memberan hajir the, Committee ne prarthna ke sath apna kam shuru kii.

Is Committee ne Education Code aur Purane Church Council ke draft Scale ko apna adhar banai, magar apni samajh anusar jahan jahan badalne ki awashyakta samjhi badal dii hai.

I. Pahile shiksha bibhag ke bare batchit hui. Dekha gaya ki Church Council Education Code se alag nahin kam kar sakti hai, jab tak ki bishesh samjhauta ya bandobast Sarkar ke sath na ho, is waste yah Committee shiphari sh karti hai ki Shiksha bibhag ke waste Church Council Education Code hi ke motabik kam kare. Magar transfer adi ke bare hamare anya karmmchariyon ke transfer adi ke saman darje ke motabik howe.

II. Church ya Evangelistic Department :-

Is bibhag ke waste Committee yah Scale thahrati hai :-

1. (a) Candidat (under Matric) Rs 15/-, 1/1 Ordained Rs 20/- 1/1 bar at 10th Year - 20th Year Rs 35/- last pay Rs 35/-.

(b) Candidate (Matric) Rs 20/- 1/1 ord. Rs 25/- 1/1 bar at 10th year - 20th year Rs 40/- last pay Rs 40/-.

(c) I.A. LTh. Rs 25/- 1/1 Ord. Rs 30/- 1/1 bar at 10th year - 20th Year Rs 45/- last pay Rs 45/-.

(d) B.A., B.D. / B.A., Lth. Rs 30/- 1/1 Ord. Rs 35/- 1/1 bat at 10th year - 20th Year Rs 50/- last pay Rs 50/-.

(e) M.A., B.D. Rs 35/- 1/1 Ord. Rs 40/- 1/1 bar at 10th year - 20th year Rs 55/- last pay Rs 55/-.

<u>Note.</u>:- The qualifications mentioned above means and includes qualifications of Indian Universities.

2. Padri :- (a) Jo Padri abhi kam men hain aur jiska 40 baras kam ho gaya hai wah mahwari Rs 40/- pawega.

(b) Jo Padri 40 baras se niche kam kiya hai uska talap aur uski bridhi uprokt niyam se hoga.

(c) Pracharak jo Padri ho gaya hai uska talap Rs 15/- se hoga, magar bridhi uprokt niyam jo II. 1 men hai hoga.

III. Pracharak :-

1. U.P. ------------- Rs 6/- 1/3 bar at 12th year - 20th year Rs 12/- last pay Rs 12/-
2. M.E. ------------- Rs 7/- 1/3 bar at 12th year - 20th year Rs 15/- last pay Rs 15/-.
3. VIII - IX & X ---- Rs 8/- 1/3 bar at 12th year - 20th year Rs 16/- last pay Rs 16/-.

IV. Jo Pracharak abhi service men hai aur U.P. se niche ka qualification hai we U.P. ke basis men gine jawe.

IV. Women - Wahi niyam jo purushon ka hai magar starting pay ek rupaiya adhik hoga.

V. Yah Committee sipharish karti hai ki uprokt item nos: I se IV ko chhor sab item jo purane Church Council darft Scale men hai chalu howe.

Sd. D. Kujur. Sd. W. Radsick. Sd. Jh. Surin

11

(Transfer Expenses) Badli Kharch.

Paddhariyon ka.

Padriyon aur Kandidaton aur Pracharakon ke liye.

Padriyon ka 25 bhar tak ya gari hone se tin gari tak.
Kandidaton ka 15 bhar ya do gari tak.
Pracharakon ke badli ka kharch ilaka jis prakar ho sake bandobast kare.
Pracharin ka 10 bhar ya ek Bail gari tak.

Schoolon ke karmmchariyon ke liye.

High School ke Head-Master ka M.E. School ke Head-Master ka M.E. Girls' School ke Head-Mistress ka	25 bhar ya tin bail gari tak.

High School ke, M.E. school aur U.P. Head-Master aur Head-Mistress ya dusre sahayak masteron ka ------- 15 bhar ya do bail gari tak.

Office Kiraniyon ke liye.

Office Kirani ke liye 15 bhar ya do bail gari tak.

Railway ya Steamer se yatra ka kharch.

Council memberon ko Pastoron ko High School Head-Master aur M.E. larka ya larki school ke Head-Master aur Head-Mistress ke liye madhyam darje ka kharch/ ya jis darje men yatra kiya jayga us darje ka asal kharch diya jayga.

Badli jane ke samay rasta khuraki.

Karmmachari ko ---- /6/- ~~per~~ prati din ke hisab se.
unki patni ------- /4/- " " "
/4/- 10 se 18 barsh tak ke umar ke larke larkiyon ko
/2/- 3 se 10 barsh tak umarwalon ko.

Tippani:- 18 barsh se upar ke larke larkiyon ke liye jo apni jiwika ka upay kar sakte hain kharch nahin diya jayga.

(Haulting Allowance) Thambhna bhatta.

Council ke Paddhariyon ko jab we Head-Quarter ko chhor mandali men ghumte hain to unko 6 anna prati din haulting kharch milega waisehi Council ke anya sadasyaon ko bhi 6 anna prati din ke hisab se milega.

Apne Ilake se bahar Council se bheje jane par jaise meeting, dharmm sabha, conference ityadi ke liye khane ka kharch.

~~XXXXXXXXXXXX~~

Padriyon ko.

High School Headmaster. M.E. Head-Master M.E. Head-Mistress	/6/- prati din.

Anya karmmchariyon ko /4/- prati din.

प्रस्तावित

कर्म्मचारी नियम-संग्रह

अर्थात

गोस्सनर कलीसा के कर्म्मचारियों

के

बेतन, कुट्टी, पेनशन, सफर या यात्रा और भत्ता इत्यादि

के नियम ।

प्रथम अध्याय ।

प्रवेशरा ।

१ । आत्मशासित गोस्सनर कलीशा के कर्म्मचारीगणों से उचित रीति से काम लेने और उनके खर्च बर्च के यथोचित प्रबंध करने को नियमों के बनाने की आवश्यकता समझी गई है। सो इस नियम संग्रह में हर प्रकार के कर्म्मचारियों के बेतन, कुट्टी, कुट्टी के भत्ता, सफर, सफर के भत्ता, यात्रा, पेनशन, प्रोभिडेण्ट फण्ड इत्यादि के नियम दिये जाते हैं ।

२ । जिस दिन या तारीख से इस नियम-संग्रह के नियम अथवा नियमों के भाग (महासभा) कौंसिल की आज्ञा से प्रचलित होंगे उसी दिन से सब कर्म्मचारी अपने विभाग में के दरजे और कामों के अनुसार अपना बेतन और भत्ता इत्यादि पाने और लेने की दावी करेंगे ।

३ । मण्डली के सब कर्म्मचारी अपने काम के लिये जवाबदिही होने और बेतन पाने, भत्ता लेने इत्यादि के लिये इस नियम-संग्रह के नियमों के अधीन हैं । नियम के बिपरीत भत्ता, बेतन, कुट्टी इत्यादि नहीं दिये जायेंगे । फिर इसी नियमानुसार काम के जवाबदिही के कैफियत लिये जायेंगे ।

शब्द-परिभाषा

कर्म्मचारी ।

४ । हर एक जन जो गोस्सनर कलीशा के किसी खजाने से हमेशे के लिये चाहे थोड़े समय के लिये कलीशा के काम करने के लिये बेतन वा मेहनताना इत्यादि पावें सो उसी समय तक के लिये मण्डली का कर्म्मचारी समझा और जाना जायगा ।

इस साधारण परिभाषा को छोड़ नीचे लिखित पद और काम में रहनेहारे भी कर्म्मचारी हैं :—

५ । (क) **पदधारी**—मण्डली की नियमावली की परिभाषा अनुसार कलीशा के प्रेसिडेण्ट, सेक्रेटरी और खजांची मण्डली के पदधारी नाम से सम्बोधित होंगे । कलीशा के ये पदधारी साधारणत: मण्डली के कर्म्मचारी हैं ।

(ख) **इलाका सभापति**—देखिये नियमावली तीसरा निर्णय ।

(ग) **पादरीपन (पेरिश) सभापति**—देखिये नियमावली तीसरा निर्णय ।

(घ) **प्रचारकपन सभापति**— ,, ,, ,, ,,

(ङ) **यूरोपियन कर्म्मचारी**—जो लोग यूरोप से अथवा अन्य देशों से गोस्सनर कलीशा में काम करने के लिये ग्रहण किये जाते हैं वे भी इस नियम-संग्रह के नियमों के अधीन हैं चाहे वे कलीशा के किसी खजाने से बेतन पावें वा न पावें अर्थात खर्च और बेतन और कुट्टी के भत्ता आदि पाने के नियमों को छोड़ अन्य कामकाज करने के लिये वे भी अन्य कर्म्मचारियों की नाईं जवाबदिही हैं क्योंकि वे भी कलीशा से बुलाये जाकर और ग्रहण होकर मण्डली के कर्म्मचारी (worker or employees) होते हैं ।

(च) **बिभागीय-प्रधान** (हेड आव डिपार्टमेण्ट)—महासभा की आज्ञानुसार कलीशा के काम ५ बिभागों में बिभक्त हैं अर्थात :—

१, मण्डली बिभाग २, शिक्षा बिभाग ३, सम्पत्ति बिभाग ४, खजाना बिभाग और ५, जनाना बिभाग ।

इन ५ बिभागों के प्रधान लोग भी कर्म्मचारी हैं, चाहे वे कलीशा के खजाने से बेतन आदि पावें अथवा नहीं और वे अपने कामकाज के लिये कौंसिल के आगे सब कर्म्मचारियों के समान जवाबदिही हैं ।

(क) पंच कर्म्मचारी—इलाका पंच, पेरिश पंच, प्रचारकपन पंच । इन पंचों के सेक्रेटरी और खजांची भी यद्यपि उनका काम वर्त्तमान में (honorary) आदरनीय रूप में बिन मेहनताना का है तथापि उनकी जवाबदिही भी कर्म्मचारियों के समान है और वे पंचों के आगे और कौंसिल के आगे सब बात और काम के लिये जवाबदिही हैं ।

६। पाट्रो—हरएक जन जिसने कलीशा से पदाभिषेक पाया है अथवा जो सेवक गोस्सनर कलीसा से ग्रहण किया गया है ।

७। कण्डिदात—प्रत्येक जन जिसने कलीसा की अध्यात्मिक सेमिनेरी से उत्तीर्ण होकर कण्डिदात होने का सार्टीफिकेट पाया है अथवा जो मिनिसटीरियुम की सिफारिश पर कौंसिल से कण्डिदात ठहराया जाकर सार्टीफिकेट पाया है ।

८। माष्टर अथवा शिक्षक—मण्डली के स्कूलों का हरएक जन जो स्कूल बिभाग में सिखावे जो माष्टर, शिक्षक, गुरु और पण्डित नाम से सम्बोधित होगा चाहे वह पुरुष हो चाहे स्त्री।

९। किरानी—हरएक जन जो मण्डली या कलीसा के किसी निर्दिष्ट आफिस या दफतर में लिखा पढ़ी करने, हिसाब रखने, टैपिङ्ग करने के लिये रखा जायगा वह किरानी अथवा किरानी बिभाग का कर्म्मचारी कहा जायगा ऐसा जन कार्य्यकारक (Executive) अथवा शासकीय (administrative) अधिकार न रखेगा ।

N. B.—हर एक कार्य्य बिभाग में किरानी रह सकते हैं।

१०। बेतन—बेतन रुपये की वह मोट संख्या है जो किसी कर्म्मचारी को महीने के अथवा महीने के कुछ हिस्सों के दिनों के लिये दिया जाय ।

११। एलोवेनस वा मिहनताना—रुपये का मोट जो किसी जन को बिशेष कामकाज के लिये दिया जाय अथवा किसी बिशेष स्थान में रहने के बिचार से ठहराया जाय । यह मासिक बेतन के अतिरिक्त होगा ।

१२। संयुक्त बेतन—(consolidated pay) किसी कर्म्मचारी को यदि बेतन और किसी प्रकार का मिहनताना एकत्र दिया जाता है और अलग २ बिल में नहीं किया जाता हो तो वह उस जन का संयुक्त बेतन कहावेगा । ऐसा संयुक्त बेतन एक पद के दो कामों में हो सकता है यदि दूसरा काम सचमुच उस पद के भीतर के कर्त्तव्य में न हो ।

१३। उमर—मंडली के काम में प्रवेश पाने के लिये चाहे पेनशन लेने के लिये कर्म्मचारी को किसी बिशेष उमर का होना चाहिये । जिस समय वह किसी नियत उमर में पहुंचे तो उसी दिन से वह अपने काम में लिये जाने अथवा पेनशन पाने के योग्य समझा जावे ।

१४। अतिरिक्त कुट्ठी—यदि किसी जन को कुट्ठियों के नियम से बाहर भी आवश्यकता के कारण चाहे बिना तलब चाहे तलब के कुछ अंश के साथ कुट्ठी दिई जाय तो यह अतिरिक्त कुट्ठी कही जायगी ।

१५। दर्जा और सीढ़ी—एक ही बिभाग में लोगों के एक ही अथवा कई एक दर्जे (grades) होंगे और उन के बिभागीय (departmental) इमतिहान के अनुसार दर्जे की भी सीढ़ी रखी जायगी ।

१६। नियुक्ति—नियुक्ति अथवा बहाली वह काम है जिससे जो जन पहिले कलीसा के काम में नहीं था पर बिभागीय प्रधान की आज्ञा से प्रथम बार काम में लगाया गया है ।

१७। पद का बेतन—(pay of an appointment) यह वह बेतन है जो किसी बिशेष पद के अथवा पद के दर्जे के लिये ठहराया गया है ।

१८। कर्म्मचारी का बेतन—यह वह मोट संख्या है जिस में किसी कर्म्मचारी को उस के पद के बेतन के साथ में जो कुछ भत्ता या मिहनताना के रूप में दिया जाय ।

१९। पेनशन—पेनशन बेतन का वह भाग है जो कर्म्मचारी को उसकी उमर के किसी नियत बर्ष में पहुंचने पर अथवा रोगी होके असमर्थ होने पर अथवा किसी रीति से अयोग्य होने पर नौकरी के किसी निर्दिष्ट मियाद में पहुंचने पर ठहराये हुए स्केल के अनुसार दिया जाय ।

२०। प्रोभिडेण्ट फण्ड—यह वह बन्दोबस्त है जिसके लिये कर्म्मचारी और मण्डली दोनों अपना अपना हिस्सा देते हैं कि कर्म्मचारी के अथवा उसके घराने के भविष्यत जीवन के लिये उपाय हो ।

द्वितीय अध्याय ।

A. बेतन और भत्ताओं पर ।

२१। हर एक जन जो किसी बिभाग के मुख्य से अथवा अन्य ऊपर दर्जे के कर्म्मचारी से किसी पद या काम पर लेख के द्वारा नियुक्त अथवा बहाली किया जाय तो वह मासिक

वेतन अथवा मिहनताना वा भत्ता जो रकम में भी हो अथवा दोनों एक संग पा सकेगा ।

२२ । प्रत्येक नियुक्ति वा बहाली करने में अधिकृत जन को उचित है कि वह अपने अधीनस्थ कर्म्मचारियों को लिख कर बहाली करे ।

२३ । निम्न सभा या पंच अथवा आफिसर निम्न प्रकार की नियुक्ति अथवा बहाली कर सकते हैं :—

(क) **महासभा**—(१) कौंसिल के पदधारियों को (२) खास और स्थायी कमिटी के अंगों को (३) विभाग विभाग के प्रधानों को (Heads of Departments) ।

(ख) **चर्च कौंसिल**—(१) पाद्रियों को (२) कंडिदातों को (३) सेमिनरी विद्यार्थियों को (४) महासभा की आज्ञा हो तो विभाग के प्रधानों को और (५) विशेष आवश्यकता पर स्थायी अथवा अल्पकालिक विशेष कर्म्मचारियों को ।

विभागीय प्रधान—अपने दफतर के (१) किरानी (२) मुनशी (३) ओभरसियर (४) सहायकों को (office-assistants) (५) चपरासी (६) भंडारी इत्यादि और खेती के लिये दरकार हो तो हलवाहियों को (७) शिक्षक पंडित इत्यादि ।

टिपणी— (क) हेड-सुपरवैजर भी निज विभाग के कामों के लिये शिक्षा विभाग के सहकारी प्रधान गिने जाते हैं ।

(ख) शिक्षक जिन का शासकीय जवाबदिही (administrative responsibility) है उन को विभागीय प्रधानों की सिफारिश पर कौंसिल विचार कर बहाल करेगी ।

(ग) **इलाका पंच**—इलाका पंच अपने सभापति अथवा आवश्यकता अनुसार सेक्रेटरी के द्वारा निम्न लोगों को बहाल कर सकती हैं :—

(१) प्रचारकों को, (२) इलाका के भीतर भंडारी, मुनशी, माली, धांगर और चौकीदार इत्यादि को जिनके बिना इलाके का काम उचित रीति से चल नहीं सकता है ।

(घ) **पेरिश पंच**—पेरिश पंचों के सब कर्म्मचारी इलाके की बिन अनुमति नहीं बहाल किये जा सकते हैं ।

(ङ) **प्रचारकपन पंच**—प्रचारकपन पंच के भी कर्म्मचारी पेरिश पंच की सिफारिश से इलाके पंच से ठहराये जा सकेंगे । नियुक्ति और बहाली का अधिकार सिर्फ इलाके पंच को है ।

२४ । इस द्वितीय अध्याय के २३वें परिच्छेद में कहे हुए सब कर्म्मचारी जिनकी बहाली अथवा नियुक्ति लेख में दिई जायगी वेतन, भत्ता, खोराकी मिहनताना जैसा ठहराया जाय पाने की दावी रखेंगे ।

B. वेतन ।

२५ । हरएक नियुक्त कर्म्मचारी का वेतन जिस दिन (७ बजे बिहान से ५ बजे संध्या तक) वह अपने ठहराये हुए काम में उपस्थित होके चार्ज लेवे उसी दिन से गिना जायगा और उसकी नौकरी भी उसी दिन से गिनी जायगी ।

२६ । यदि कोई कर्म्मचारी जो दूसरे के स्थान पर (ओफिसियेटिंग) काम कर रहा है और उसी समय उसकी पूरी बहाली उसी काम पर या दूसरे काम पर हो जाय तो बिन नये सिरे हाजिरी दिये भी वह उसी नई नियुक्ति के काम का वेतन उसके नियुक्त किये जाने की तारीख से पा सकेगा ।

२७ । **महासभा और कौंसिल के पदधारी**—महासभा या कौंसिल के ३ पदधारियों का वेतन यों होगा :—

(क) प्रेसिडेण्ट, सेक्रेटरी और खजांची इनका आरम्भिक वेतन ६०/ रु: से शुरू होवे । यदि कोई इस पद पर आने के पहिले नियमित रूप से कम भी पाता था तथापि महासभा से चुने जाने के दूसरे दिन से वह ६०/ रु: के दर से वेतन पावेगा ।

(ख) साल साल पदधारियों का वेतन १०/ रु: करके बढ़ेगा जब लों यह १००/ रु: महीने की हद्द तक न पहुंचे ।

(ग) यदि पहिले मियाद में १००/ रु: के हद्द तक न पहुंचे तो दूसरे मियाद में फिर निर्वाचन होने से इस हद्द तक पहुंच सकेगा ।

(घ) यदि कोई पदधारी १००/ रु: के हद्द तक पहुंचने के पहिले ही दूसरे निर्वाचन में न चुना जावे पर पीछे के वर्षों के किसी निर्वाचन में चुना जाय तो जिस वेतन पर होवे वह पहिले या उसी वेतन में फिर अपना काम आरम्भ करेगा ।

टिपणी—यदि उपरोक्त पदों में से किसी पद पर कोई यूरोपियन अथवा परदेशी जन रहे तो वर्त्तमान एग्रीमेन्ट अनुसार उन पर यह नियम नहीं लगने का ।

२८। बिभागीय कर्म्मचारियों का—कार्य्य बिभागों के प्रधानों को किसी प्रकार का बेतन वा मिहनताना नहीं दिया जाता है वे अपने निज (substantive) काम के साथ २ यह दूसरा काम भी करेंगे केवल हेड-सुपरवैजर को छोड़ जिसका बेतन निर्द्धारित है अर्थात :—

६०) रुः से आरम्भ कर ५/२ करके ९०) रुः तक ।

२९। पाद्रियों का बेतन—मिड्ल इंगलिश से मेट्रिक्युलेशन तक के पाद्रियों को ३०) रुः से ५/५ करके ५०) रुः लिखित परीक्षा साथ ।

अन्य कम पढ़े हुओं पर।

२० वर्ष वा उससे ऊपर नौकरी किये हुए पाद्रियों को ३०) रुः से ५/५ करके ४०) रुः बिन परीक्षा के ।

कम पढ़े पर परीक्षा साथ।

२० वर्ष वा उससे ऊपर नौकरी किये हुए पाद्रियों को ३०) रुः से ५/१ करके ५०) रुः लिखित परीक्षा साथ ।

(क) इमतिहान का बंदोबस्त चर्च कौंसिल से होगा । फेल हुआ जन पीछे के वर्षों में भी परीक्षा लिख सकेगा ।

(ख) कर्म्मचारियों को अपने ही पेरिश वा प्रचारकपन में खेती करने पर दोन परन के काठ में दो आना महीना करके काटा जावे ।

(ग) जो खेती साझे में होती है वह कर्म्मचारी के लिये खेती न समझी जाय ।

३०। प्रचारकों का —मिड्ल इंगलिश और उससे ऊपरवाला प्रचारक १२) रुः से ३/५ करके २५) रुः लिखित परीक्षा के साथ ।

२० वर्ष वा उससे ऊपर नौकरी किये हुए प्रचारकों को बर्त्तमान बेतन से १/२ करके २०) रुः बिन परीक्षा जांच के ।

२० वर्ष वा उससे ऊपर नौकरी किये हुए प्रचारकों को बर्त्तमान बेतन से ३/१ करके २५) रुः लिखित परीक्षा साथ ।

३१। मास्टरों का— (क) लड़कों के स्कूलों में ।

हाई स्कूल प्रिंसिपेल / हेडमाष्टर का	१००)	से	५/१ करके	२००)	तक।	Ed. Code. Page 149.
M. A.	६०)	,,	३/२ ,,	१५०)	,,	
B. A. Graduate	५०)	,,	५/२ ,,	१००)	,,	
B. A. (Tr.)	६०)	,,	३/२ ,,	१२०)	,,	
I. A. (Tr.)	४५)	,,	२/१ ,,	८०)	,,	
I. A.	३५)	,,	१/१ ,,	६०)	,,	
Matric 1st Gr. Tr.	३०)	,,	१/१ ,,	५०)	,,	A. B. Minutes of October 1924.
Matric stand. or V.M.	२५)	,,	१/१ ,,	४५)	,,	
M. E. M. V.	२०)	,,	१/१ ,,	४०)	,,	
M. E. G. T.	१०)	,,	१/२ ,,	२०)	,,	
U. P. G. T.	८)	,,	१/२ ,,	१५)	,,	
Classical teachers	३०)	,,	१/१ ,,	५०)	,,	See Code.
Vernacular teachers	२०)	,,	१/१ ,,	४०)	,,	

नोट : कि प्रादेशिक एडुकेशन कोड के नियमों पर भी ध्यान दिये जायेंगे। जैसे ३१४ ३१६ और ३१९ सेक्सन पर ।

३२। किरानी अथवा मुन्शियों का—कौंसिल आफिस में अथवा स्कूल और अन्य आफिसों में जहां किरानियों की बिशेष जरूरत हो वहां उनका बेतन यों होगा—

हेड क्लार्क ३०) रुः से ६०) रुः तक ।

सेकेण्ड क्लार्क २०) रुः से ५०) रुः तक ।

एप्रिनटिस क्लार्कों को १०) रुः से २०) रुः तक ।

३३। बंगला और हाता चौकीदार, भण्डारी और चपरासी आदियों को ८) रुः से १/२ २०) रुः तक ।

३४। मालियों, धांगरों और अन्य छोटे नौकरों का स्थानीय दर के अनुसार बिभाग के प्रधान अथवा पंच के अधिकारी लिख कर नियुक्त करें और बेतन देवें।

(ख) लड़कियों के स्कूलों में।

U. P. Trd.	१०) रु: से १/१ करके १८) रु: तक।	
M. V. failed & Trd.	११) ,, १/१ ,, १८) ,,	
M. V. Trd.	१२) ,, १/१ ,, २१) ,,	
M. E.	१३) ,, १/१ ,, २१) ,,	
Class VIII Senr. Trd.	१५) ,, १/१ ,, २३) ,,	
Class IX	१८) ,, १/१ ,, २५) ,,	
Class X	२०) ,, १/१ ,, ३०) ,,	
S. S. L. C. or untr.	२५) ,, १/१ ,, ३५) ,,	
S. S. L. C. or Senr. Tr.	३०) ,, १/१ ,, ४५) ,,	A. B. Minutes April 1926.
Matric Tr. Eng.	३५) ,, १/१ ,, ५०) ,,	
I. A. untr.	३५) ,, २/१ ,, ५०) ,,	
I. A. Trd.	५०) ,, २/१ ,, ७५) ,,	
I. A. L. T. Tr.	६०) ,, २/१ ,, ८५) ,,	
B. A.	६०) ,, २/१ ,, १००) ,,	
B. A. L. T.	७०) ,, ३/१ ,, १२०) ,,	

तृतीया अध्याय।

(Leave & Leave Allowance) छुट्टी और छुट्टी भत्ता।

३५। मण्डली के हरएक दर्जे के कर्म्मचारियों को छुट्टी मिल सकती है, पर दाबी की रीति से नहीं अर्थात चर्च कौंसिल को छुट्टी आदि देने और नकारने का पूरा अधिकार है। इतना ही नहीं पर यदि कोई जन छुट्टी में हो तो वह भी आवश्यकता घटने पर काम में बुला लिया जा सकेगा जिस्तें मंडली के काम पर किसी प्रकार का बिघ्न न होवे। तथापि कौंसिल को यह अधिकार रहेगा कि वह कर्म्मचारियों को बिशेष घटना, दुःख, बीमारी और आवश्यकता पर छुट्टी देवे और इसी लिये निम्न प्रकार की छुट्टियां ठहराई जाती हैं:—

(क) Privilege Leave हक्क छुट्टी।

३६ (क) साधारणतः जवाबदिही आफिसर और कर्म्मचारियों को जिनका बेतन ५०) रु: से अधिक है उन्हें प्रति बर्ष के १२ महीनों में एक महीने की छुट्टी मिल सकती है अर्थात ११ महीना बिन रोकटोक के काम करने पर १ महीने की छुट्टी मिलेगी।

(ख) जिन कर्म्मचारियों का बेतन ५०) रु: से १०) रु: तक है उन्हें प्रत्येक दो बर्ष में १ महीने की हक्क-छुट्टी दी जा सकती है।

(ग) १०) रु: से कम बेतनवाले नौकरों, धांगरों और हलजोता नौकरों को उनके मालिक जिनके अधीन वे काम करते हैं आवश्यकता के अनुसार छुट्टी दे सकते हैं इस शर्त पर कि उनको १५ दिन से अधिक की छुट्टी एक साथ नहीं मिलेगी।

टिप्पणी— उपरोक्त नियम तब के लिये है जब कि कर्म्मचारी लगातार बिना रोकटोक के ११ महीनों तक काम करता रहा है।

३७। किसी दशा पर कर्म्मचारियों को एक लगात्त ३ महीने से अधिक की हक्क की छुट्टी नहीं दी जायगी।

३८। यदि कोई कर्म्मचारी हक्क छुट्टी से लौट आने की तारीख पर हाजिर न हो तो उसके काम का रोकटोक होना समझा जायगा और उस पीछे की हक्क छुट्टी के पाने की दाबी न रही। तथापि यदि चर्च कौंसिल के बिचार में यह जचे कि उसकी अनुपस्थिति मनुषीय शक्ति से बाहर था तो उसकी गैरहाजिरी का बन्ध कूट जायगा।

३९। यदि कोई कर्म्मचारी बीमारी की दशा में छुट्टी लेना चाहे और उसका हक्क-छुट्टी पावना हो तो उसको प्रथम यह हक्क-छुट्टी दिई जायगी।

४०। सब हक्क-छुट्टी पानेवालों को पूरे महीनों का बेतन भत्ता आदि दिया जायगा।

४१। यदि किसी कर्म्मचारी को पूरे वेतन के साथ किसी प्रकार का भत्ता दिया जाता था तो हक्क-छुट्टी में रहने पर भी वह उस भत्ता के पाने का हकदार होगा।

४२। यदि किसी कर्म्मचारी को घर भाड़ा भत्ता के रूप में वेतन के संग दिया जाता हो और कोई दूसरा जन उस कर्म्मचारी की छुट्टी के समय में एक्टिंग (acting) करता हो तो उस दशा पर हक्क-छुट्टी के समय वेतन मिलने पर वह घर भाड़ा काट लिया जायगा।

४३। यदि किसी कर्म्मचारी की बदली की आज्ञा हुई हो और अपने नये काम में उपस्थित होने के पहिले वह हक्क-छुट्टी में जाय तो छुट्टी से लौट कर वह अपने नये पद और काम का वेतन और भत्ता आदि नहीं पर पुराने काम का वेतन और भत्ता आदि पाने का हक्कदार होगा।

४४। साधारणतः हक्क-छुट्टी ऐसे लोगों को नहीं दिई जायगी जो कि स्कूल आदि विभागों में काम करते हैं उन को छोड़ जो शासकीय जवाबदिही का काम करते हैं क्योंकि इस विभाग में काम करनेवालों को स्कूलों की कितनी छुट्टियां मिलती हैं परन्तु भारी आवश्यकता के होने पर ऐसे विभाग के कर्म्मचारियों को हक्क-छुट्टी आधे वेतन पर दी जायगी।

४५। शिक्षा आदि विभाग के लोगों को वेकेशन के साथ लगास्त हक्क-छुट्टी नहीं दी जायगी।

४६। यदि ऐसे विभाग के कोई कर्म्मचारी जहां (वेकेशन) अवकाश छुट्टी होती है पर उसको जवाबदिही का (administrative) काम हो और ऐसे अवकाश-छुट्टी में सहज से अपने हेड-क्वार्टर से अन्यत्र नहीं जा सकता हो तो ऐसे कर्म्मचारी को हक्क-छुट्टी साधारण नियमानुसार मिलेगी।

४७। साधारणतः बिमारी-छुट्टी (medical leave) विशेष छुट्टी (special leave) बहुत दरकारी कामों पर; प्राइवेट काम की छुट्टी और अतिरिक्त छुट्टी (Extraordinary leave) में हक्क-छुट्टी जोड़ी जा सकती है।

(ख) (Departmental leave) ट्रेनिंग और इमतिहान छुट्टी।

४८। किसी विभाग का कर्म्मचारी यदि वह शिक्षा (Training) पाने के लिये कौंसिल की मंजूरी से कहीं भेजा जाय तो वह अपने स्थायी काम से वहां जाने की अनुमति अथवा आज्ञा नियत समय के लिये पावेगा और यह ट्रेनिंग मियाद उसकी पूरी नौकरी में हिसाब होगी।

४९। यदि कोई कर्म्मचारी प्राइवेट रीति से इमतिहान में जाने की अथवा तैयारी करने की इच्छा से छुट्टी लेवे तो वह हक्क-छुट्टी पा सकता है अथवा यदि ऐसी छुट्टी उसके लिये नहीं है तो वह (special) विशेष छुट्टी अथवा अन्य छुट्टी ले सकता है।

५०। यदि किसी कर्म्मचारी को मण्डली की ठहराई अथवा सरकारी ठहराई हुई (departmental examination) विभागीय परीक्षा में पहुंचने और रहने की आवश्यकता हो तो ऐसे कर्म्मचारी को उचित समय तक के लिये अर्थात परीक्षा के दिनों की और परीक्षा स्थान में पहुंचने और वहां से लौट आने तक की छुट्टी मिलेगी।

५१। इस प्रकरण में की छुट्टी पानेवालों को अपना पूरा वेतन मिलने का हक्क होगा।

(ग) (Medical leave) रोगहारी छुट्टी।

५२। रोगग्रस्त होने पर बिमारी की दशा में रोगहारी छुट्टी, जब अन्य प्रकार की छुट्टियें चुक गई हों तो १ बरस तक एक बेर में मिल सकेगी। रोगग्रस्त होने की सर्टीफिकेट उपयुक्त डाक्टर से अथवा विश्वासी वैद्य से कौंसिल में अथवा विभागीय अधिकारी के पास पेश होना चाहिये।

५३। कर्म्मचारी जिसको डाक्टर की सिफारिश पर रोगहारी छुट्टी मिलेगी उसे उसके वेतन का आधा इस समय के लिये मिला करेगा।

५४। यदि १ बरस की रोगहारी छुट्टी के पीछे कर्म्मचारी काम में उपस्थित होवे और फिर तुरन्त दूसरी बार छुट्टी लेवे तो उसे फिर एक बरस तक छुट्टी मिलेगी, पर इस दूसरी बार उसे चौथाई तलब मिला करेगा।

५५। उपरोक्त दो बरसों से यदि कोई कर्म्मचारी अधिक दिन रोगी हो तो उसे पेनशन दिलाया जाय अथवा यदि वह पेनशन का हक्कदार न हो तो उसे बोनस वगैरह देके काम से अलग कर दिया जाय।

(घ) फरलो।

५६। यदि कोई कर्म्मचारी जिसने ८ बरस तक मण्डली की सेवा किई है तो उसे एक बरस तक की फरलो छुट्टी दिई जा सकती है।

टिपणी—हक़-छुट्टी से फरलो लेने में कोई रोकटोक नहीं है।

५७। यदि किसी कर्म्मचारी ने १५ बरस मण्डली की सेवा किई है तो उसे दो बरस तक अथवा कम समय तक फरलो छुट्टी मिल सकती है।

५८। फरलो लेनेवाले कर्म्मचारियों को हमेशे उनके तलब का आधा मिला करेगा।

५९। फरलो सिर्फ उन कर्म्मचारियों को मिलेगा जिन का वेतन २०) रु: अथवा २०) रु: से ऊपर है।

(ङ) घरैलो कारबारी छुट्टी (Leave on Private Affairs)

६०। यदि किसी कर्म्मचारी ने छः बरस तक काम किया है और यदि उसने कोई लम्बी छुट्टी न लिई हो तो उसे आवश्यकता के कारण घरैलो कारबारी छुट्टी एक लगस्त ४ महीनों तक दिई जा सकेगी।

६१। घरैलो कारबारी छुट्टी के लिये कर्म्मचारी के उसके वेतन का आधा इस छुट्टी के मियाद के लिये मिलेगा।

टिपणी—(१) स्मरण रहे कि घरैलो कारबारी छुट्टी संग्रहित (accumute) नहीं होता और किश्त २ में नहीं ली जा सकती है।

(२) रोगहारी छुट्टी की मियाद भी घरैलो कारबारी छुट्टी लेने में हिसाब होगी।

(च) (Extraordinary leave) अतिरिक्त छुट्टी।

६२। आवश्यकता पर बिना वेतन और भत्ता के छुट्टी दी जा सकेगी इस दशा पर कि कर्म्मचारी को और कोई अन्य छुट्टी मिलने का हक़ नहीं है।

६३। इस प्रकरण में की छुट्टी दूसरे प्रकार की छुट्टी लेने के लिये नौकरी में हिसाब नहीं हो सकता है।

६४। बहुत ही जरूरती के आ घटने पर ऐसी अतिरिक्त छुट्टी दूसरी छुट्टियों के लगस्त दिई जायगी यदि कौंसिल के अथवा विभाग के मुख्य के विचार में ऐसी छुट्टी देना उचित जचे।

६५। जवाबदिही कर्म्मचारी को अतिरिक्त छुट्टी मिलने का हक़ नहीं है।

Pension (पेनशन।)

६६। साधारणतः मंडली के सब कर्म्मचारियों को किसी विभाग का क्यों न हो, जिनका वेतन १०) रु: अथवा १०) रु: से ऊपर है और मंडली में कम से कम १० बरसों तक काम किये हैं उन को पेनशन दिया जायगा।

६७। साधारणतः निम्न प्रकार के कर्म्मचारी अथवा नौकर पेनशन के हक़्क़दार नहीं होंगे :—

(क) जब कभी कोई जन अल्प काल (temporary) के लिये काम में लगाया गया हो जिस के अन्त पर वह छुड़ा दिया जा सकेगा।

(ख) जब कोई जन मजदूर के समान अथवा रोकाड़ी मेहनताने पर अथवा महीना के मेहनताने पर लगाया गया हो और जिस को एक महीने का नोटिस देकर छुट्टी दे दी जा सकती है।

(ग) जब किसी कर्म्मचारी का पूरा समय मंडली के काम में नहीं लगता पर उसको जितना काम वह करता है उसी के लिये मेहनताना दिया जाता हो।

(घ) यदि कोई कर्म्मचारी कुचाली हो, और काम में अयोग्य हो अर्थात अपने नौकरी के काम के करने में निपुण न हो और उसका काम असन्तोषजनक हो।

(ङ) यदि कोई किसी काम में उम्मेदवार के समान लगाया गया हो।

(च) यदि कोई कर्म्मचारी अतिरिक्त छुट्टी (Extraordinary leave) अथवा बिन वेतनवाली छुट्टी लिया हो तो ऐसी छुट्टी पेनशन के लिये नहीं गिनी जायगी।

६८। निम्न प्रकार से पेनशन दिया जायगा :—

वेतन कर्म्मचारी	नौकरी समय	पेनशन पावना।
रु: १० से ३०	१० बरस	चौथाई।
,,	१० से २० बरस	तिहाई।
,,	२० से ३० बरस	आधा।

रु: ४० से ६०	१० बरस	चौथाई ।
,,	१० से १५ बरस	तिहाई ।
,,	१५ से ऊपर	आधा ।
रु: ७० से ऊपर	१० बरस	तिहाई ।
,,	११ से ऊपर	आधा ।

टिपणी—पेनशन में आना पाई इत्यादि का हिसाब न किया जायगा ।

पेनशन में रोकटोक ।

६९ । यदि कोई कर्म्मचारी बुरे चाल का कहकर दोषी माना जाय अथवा कोई अपराध में दोषी समझा जाय और ससपेन्ड किया जाय तो ससपेन्ड होने के समय जितना समय तदारुक में लगे और पीछे निर्दोष पाया जाय तो तदारुक का समय नौकरी के हिसाब में गिना जायगा । परन्तु यदि वह दोषी प्रमाणित होवे तो ससपेन्ड होने की तारीख से पीछे का समय नौकरी में न गिना जायगा ।

७० । यदि कोई कर्म्मचारी दोषी पाया जाय पर अपील पर निर्दोषी ठहराया गया हो तो ससपेन्ड की तारीख से पीछे का समूचा समय उसकी नौकरी में गिना जायगा ।

७१ । यदि कोई कर्म्मचारी मंडली के एक काम से मंडली के दूसरे काम में जाने के लिये अपने वर्त्तमान नौकरी से स्तीफा देवे तो यह स्तीफा मंडली के काम से स्तीफा न माना जायगा ।

७२ । यदि कोई कर्म्मचारी किसी विशेष काम अथवा विभाग के उठा दिये जाने के कारण छुट्टी पावे (discharge) तो इस दशा पर छुट्टी पाने के पीछे का समय पेनशन के लिये नहीं गिना जायगा ।

(Invalid Pension) रोगी-पेनशन ।

७३ । यदि किसी की उमर ६० बरस हो तो उसको रोगी हो जाने के लिये समझ जाने को डाक्टरी सर्टीफिकेट की जरूरत नहीं है । सिर्फ विभागीय मुख्य उसके असमर्थ होने की सिफारिश कौंसिल में करे ।

७४ । साधारणतः कर्म्मचारी जिनकी उमर ६० बरस हो गई है वे पेनशन के हक़्क़दार हैं । कौंसिल उचित समझे तो ६० बरस से ऊपर उमरवालों को पेनशन लेने को बाध्य करेगा ।

७५ यदि कोई कर्म्मचारी गोस्सनर कलीशा में १० बरस काम कर चुका है और तब रोगग्रस्त होवे तो डाक्टरी सर्टीफिकेट पर उसे दफा ६८ के अनुसार पेनशन दिया जायगा ।

यात्रा और सफर ।

७६ । निम्न कर्म्मचारी सफरी-कर्म्मचारी माने जायेंगे :—

(क) वह जो गोस्सनर कलीशा के काम में हमेशे महीना २ सफर करे और जिसको महीने में कम से कम २० रोज सफर में रहने की आज्ञा हो और अपने सफर का प्रोग्राम अपने विभाग के मुख्य को देवे ।

७७ । सफरी कर्म्मचारी को सड़क पर निम्न scale (श्रेणी क्रम) पर भत्ता दिया जायगा :—

कर्म्मचारी-वेतन	सफर की दूरी	दर भत्ता
२०) से ४०)	६ से २० मील	।) प्रति मील
,,	२० से ५० ,,	।।) ,,
४१) से १००)	६ से ३० मील	।।) ,,
	३१ से १०० ,,	') ,,

७८ । सफरी कर्म्मचारी को रेल पर, बस्स पर, नाव या डोंगी पर, स्टीमर पर खर्च यों मिलेगा :—

कर्म्मचारी वेतन	दर्जा, गाड़ी या बस्स, स्टीमर आदि ।
२०) से ५०)	तीसरा दर्जा
५१) से १००)	मध्यम दर्जा (inter)
	यदि मध्यम श्रेणी न हो तो III श्रेणी ही पर ।

७९ । जो सफरी कर्म्मचारी नहीं हैं परन्तु तौभी अपने कर्त्तव्य के कारण जिन्हें अपने इलाके में घूमना पड़ता है उन्हें इस हिसाब से भत्ता मिलेगा :—

कलोसिया के पदधारी ।

(क) इनको हर हालत में दूसरे दर्जे का खर्च रेल, स्टीमर, बस्स इत्यादि के लिये दिया जायगा । यदि कोई नीचे दर्जे की सवारी में सफर करना चाहें तो वे उस से नीचे

दर्जे का किराया लेकर सफर कर सकते हैं पर दूसरे दर्जे का खर्च उनकी हकीयत दावी है।

(ख) रास्ते वा सड़क में यदि वे जावें तो उन को ५० मील तक ⁄) आना प्रति मील के दर से और ५१ से १०० मील तक एक दिन में जाने से)॥ प्रति मील खर्च मिलेगा।

टिपणी—साधारणतः पदधारियों को रास्ते में ३० मील से अधिक एक दिन में जाना आवश्यक नहीं है पर अत्यावश्यक काम पर वे अधिक लम्बी यात्रा कर सकते हैं।

पाद्री कांडिडात और प्रचारक।

८०। कर्म्मचारी यदि अपने इलाके के भीतर ५ मील की व्यास तक सड़क में चल कर सफर करें तो वे किसी प्रकार के भत्ता के हक़्दार नहीं हैं। उससे अधिक दूरी की सफर हो तो घर से अथवा हेडक्वार्टर से हिसाब यों होगी:—

१ से १० मील तक)। प्रति मील।
११ से २० मील तक)॥ प्रति मील।

टिपणी—साधारणतः पाद्रियों को जो मंडली काम के चार्ज में हैं, सड़क में १२ मील से अधिक सफर न करना चाहिये और प्रचारकों को छः मील से अधिक नहीं।

(ख) रेल में, बस्स में और स्टीमर वगैरह में।

८) से ३५) बेतनवालों को तीसरा दर्जा।
३६) से ६०) „ „ मध्यम दर्जा।

८१। कौंसिल के सदस्यों को।

सड़क पर की यात्रा के लिये प्रति मील)॥
रेल और बस्स स्टीमर पर मध्यम श्रेणी की गाड़ी
(मध्यम श्रेणी न हो तो III दर्जे पर)

८२। अन्य सब कर्म्मचारियों का।

मंडली के कर्म्मचारी जिनका उल्लेख ७९ ८०, ८१ दफाओं में नहीं है पर कलीशा में जवाबदिही का काम करते हैं उन को इस हिसाब से भत्ता दिया जायगा:—

कर्म्मचारी बेतन	दर्जा गाड़ी आदि में
२५) से ५०) तक	तीसरा दर्जा।
५०) से १०६) तक	मध्यम दर्जा।
१०१) से ३००) „	दूसरा दर्जा।

२५) से नीचे बेतनवालों को सदा तीसरे दर्जे का किराया मिलेगा।

(Halting Allowance) थम्भन भत्ता।

कौंसिल के पदधारी और अंग।

८३। कौंसिल के पदधारियों को जब वे हेडक्वार्टर छोड़ कर मंडली में घूमते हैं तो उनको दिहातों में ॥) आना प्रतिदिन होल्टिंग खर्च मिलेगा। शहर के स्थानों में प्रतिदिन १) रु: करके। वैसेही कौंसिल के अन्य सदस्यों को ॥) आना करके होल्टिंग भत्ता सब स्थान में मिलेगा यदि वे अपने हेडक्वार्टर से अन्य स्थान में रहें।

८४। अपनी कलीशा के इलाके से बाहर कौंसिल से भेजे जाने पर जैसे मीटिंग, धर्म्मसभा कानफरेन्स इत्यादि के लिये खाने का खर्च।

पदधारियों को और अंगों को मार्ग में १) रु: प्रतिदिन।
मीटिंग स्थान में जैसे सब प्रतिनिधियों का नियत खर्च हो।

टिपणी—किसी कर्म्मचारी अथवा पंच के अंगों को राह में रहने के समय के लिये होल्टिंग खर्च नहीं दिया जायगा।

(Transfer Expenses) बदली खर्च।

पदधारियों का।

८५। नये निर्बाचन में जो कोई प्रेसिडेन्ट वा सेक्रेटरी हो और रांची छोड़ अन्यत्र रहें तो उन्हें रांची आने के लिये निम्न प्रकार से खर्च दिया जायगा।

बैल गाड़ी	...	१० गाड़ी तक का असल खर्च।
रेल में	...	२००) तक असबाब के लिये।
कुली	...	१५०) तक असबाब के लिये।

परिवार के लोगों का मध्यम श्रेणी का भाड़ा और नौकर दो जन तक को तीसरे दर्जे का भाड़ा दिया जाय।

८६। पादरियों और कंडिदातों के लिये।

कर्म्मचारी का वेतन	खर्च का हद्द।	
२५) से ४०)	१००)	बिल्ल के देने पर।
४०) से ५०)	१५०)	

८७। प्रचारकों के लिये।

प्रचारकों के लिये बदली का खर्च इलाके के भीतर में ५०) हद्द रखा जाता है जो कि बिल्ल देने पर इलाके से दिया जायगा।

(Tour Programmes) सफर का प्रोग्राम।

८८. प्रत्येक जन को जो सफर निकलता है अपनी यात्रा का प्रोग्राम बनाना और देना चाहिये। प्रोग्राम के ३ नकल होवें। १ला नकल विभाग के प्रधान के पास, २रा नकल जहां जहां कर्म्मचारी सफर करे वहां वहां भेजा जाय और तीसरा नकल कर्म्मचारी अपने पास रखे। यदि किसी विशेष कारण से रोकटोक होवे तो कर्म्मचारी दूसरा दुहराया हुआ (Revised Tour Programme) देवे। पर किसी दशा में बिन प्रोग्राम के सफर न किया जाय। साधारणतः सफरी कर्म्मचारी को महीना भर का प्रोग्राम देना उचित है।

८९। पदधारियों और विभाग के मुख्याओं (Heads of Departments) को अपने प्रोग्राम का एक नकल कौंसिल के आफिस में भेजना चाहिये जिस्से सफर की गति कौंसिल को मालुम रहे। दूसरे नकल की प्रतियां जहां जहां सफर होगी वहां वहां भेजी जायें और तीसरा नकल वे अपने पास रखें। किसी दशा पर बिना प्रोग्राम के सफर न किया जाय जबलों भारी आवश्यकता के कारण कौंसिल से वे न भेजे जायें जिस के लिये प्रोग्राम की आवश्यकता न होगी। रोकटोक होने पर दुहराया हुआ प्रोग्राम बनाया जाय।

(Head-Quarter) हेडक्वार्टर।

९०। कलीशा के कर्म्मचारियों को जो नियमित रूप से मंडली के खजानों से वेतन इत्यादि पाते हैं यह जानना चाहिये कि वे २४ घंटे मंडली के नौकर हैं इसलिये जिनका जवाबदिही शासन-कार्य्य (administrative responsibility) है और जिनका काम हेडक्वार्टर से बाहर में नहीं है वे किसी प्रकार से अपने हेडक्वार्टर से बिन छुट्टी कहीं नहीं जा सकते हैं। हेडक्वार्टर के ३ मील की व्यास पर वे रह सकते हैं पर उससे बाहर उनका जाना मना है। जब जब काम पड़े आवश्यकता पर विभाग के प्रधान की आज्ञा पर अथवा संस्था के प्रधान के हुक्म पर ऐसे कर्म्मचारियों को काम करना चाहिये।

(Discharge, Suspension, Dismissal)
काम से छुड़ाना, रोकना और निकालना।

९१। यदि कोई अल्पकालिक (temporary) कर्म्मचारी अपने काम में अयोग्य पाया जावे तो विभाग अथवा संस्था का प्रधान उसे काम से छुड़ा दे सकता है।

९२। यदि किसी विभाग के उठा देने के द्वारा अथवा काम के बन्द करने के कारण कर्म्मचारियों को जो स्थायी कर्म्मचारी भी हों तो उन को एक महीने का नोटिस देकर काम से छुड़ा दिये जा सकेंगे।

९३। यदि कोई कर्म्मचारी बुरे चाल में, कर्त्तव्य के न करने में, आज्ञा उल्लंघन में, चोरी में अथवा अन्य अपराध में पकड़ा जाय तो वह अपने काम से रोक दिया जायगा (suspended) और नियमानुसार उसका विचार होगा।

९४। यदि कोई कर्म्मचारी किसी भी अपराध में पकड़ा जाय और मंडली की उचित न्यायालय में उसका अपराध प्रमाणित हो तो जैसा न्यायक लोग अपनी राय देंगे उसी अनुसार उसे सजा मिलेगी अन्यथा वह अपने काम से निकाल दिया जायगा (dismissed).

टिपणी— कोई कर्म्मचारी जो मंडली के किसी पंच से अथवा न्यायालय से सजा पाया हो उसे अन्य कोई पंच अथवा सभा काम में न लगावे जब तक अपील अदालत उसे फिर काम में बहाल न करे।

(Re-instatement) काम में पुनः बहाली।

९५। कोई भी कर्म्मचारी जो मंडली के खजाने से नियमित रूप से वेतन पाता हो सो किसी पंच से दोषी पाये जाने पर ऊपर पंचों तक, हां चर्च कौंसिल और महासभा तक अपील कर

सकता है और अपील में निर्दोष पाये जाने पर अपने पुराने काम पर फिर बहाल होगा और ससपेन्ड की तारीख से अपील के हुक्म की तारीख तक उसका वेतन उसको दिया जायगा। सब अपील ३ महीनों तक के भीतर किये जायें।

(Overstaying Leave & Absenting).

छुट्टी से अधिक समय बिताना और अनुपस्थिति।

९६। यदि कोई कर्म्मचारी अपने छुट्टी के समय से अधिक अपने काम से अलग रहे अथवा किसी प्रकार से काम से ३ दिन से अधिक काल तक अनुपस्थित होवे तो वह अपने काम पर अपना हक्क खो देता है और इस प्रकार से वह अपने काम से छुट्टी पा जाता है (loss of appointment).

टिपणी—यदि कौंसिल के विचार में ऐसी अनुपस्थिति कर्म्मचारी के सामर्थ्य से बाहर समझा जाय अर्थात कि इस अनुपस्थिति को रोकने में वह विवश था सो यह अपराध क्षमा कर दिया जा सकता है।

(Break in Service) काम का टूट।

९७। यदि कोई कर्म्मचारी किसी प्रकार से अपने काम से अलग कर दिया जाय और वह दो बरसों तक ऐसा ही रहके पीछे पुनः बहाली होवे तो यह पीछे की नौकरी उसकी पुरानी नौकरी में जोड़ दिई जा सकगी परन्तु यदि दो बरस से अधिक समय तक वह नौकरी से अलग रहे और पीछे फिर से मंडली में काम पावे तो बीच का समय 'काम का टूट' समझा जायगा और उसे नई रीति से नौकरी आरम्भ करना पड़ेगा।

(Joining Reports) काम में हाजिरी रिपोर्ट।

९८। यदि कोई कर्म्मचारी अल्पकाल के लिये (temporary) नियुक्त हो अथवा छुट्टी से अपने काम पर लौटे तो उसे अपने काम में लौट कर हाजिर आने का दिन तारीख और समय का रिपोर्ट अपने प्रधान को चाहे संस्था अथवा विभाग के प्रधान को देवे।

(Service Book) नौकरी बही।

९९। सब कर्म्मचारियों के लिये जिनको कलीशा के खजाने से नियमित रूप से वेतन दिया जाता है उन के लिये "नौकरी बही" रखी जाय जिस में उन के काम, व्यवहार, चाल, योग्यता आदि के वृत्तान्त लिखे जायें। विभागीय प्रधानों की, पाद्रियों की और कंडिदातों की "नौकरी बही" कौंसिल के आफिस में और अन्य कर्म्मचारियों का इलाका आफिस में और मिड्ल से ऊपर दर्जे के स्कूलों के शिक्षकों का स्कूलों के आफिस में और हेड माष्टरों का हेड-सुपरवैजर के आफिस में रखे जायेंगे।

(Provident Fund) प्रोविडिण्ट फण्ड।

१००। पेनशन को छोड़कर भी जो प्रोविडेण्ट फण्ड के नियम कर्म्मचारियों के लिये कलीशा से ठहराये हुए हैं सो चालु और आवश्यक समझे जायेंगे। पेनशन में इससे कोई रोकटोक न होगा॥

——::o::——

The G. E. L. Church in Chotanagpur & Assam.
RANCHI (Behar) INDIA.

Secretary: P. D. KANDULNA, B. A.

RANCHI,

Dated 8th Feb: 1937.

Nos: 1147-68/37/F.-51.

Manyawar Padris, Ilaka Chairmen, Gossner Church,

Ap ko malum howe ki anewali Mahasabha ki baithki ka ta: 12 se 15 April ko thik hua hai. Ap apne Ilake ki anewali baithki men pratinidhiyon ko chun kar su-samay men unka nam Council ko bhejiye.

P. D. Kandulna
Secretary,
G.E.L. Church.

To

All the Chairmen of the

Ilakas of the Gossner Church.

30/7/36

Put up in the next meeting.

Church Council
Received 1.8.36
Register No. 284
Date 28.7.36
File 29
Reply No.
Date

P

35 South Road.
P. O. Entally.
Calcutta.

The 28th. July, 1936.

To,

The Secretary, G.E.L. Church.

Chota Nagpur & Assam. Ranchi.

Dear Sir,

In acknowledging receipt of your Memo. No. 474/36/ F-29, dated the 9th. July, 1936, communicating to me the Church Council's - Bichar dated the 7th. July, 1936, I have the honor to send you an Appeal to the next Mahasabha of the Church and the same may be placed before that august body in due time.

2. As my Appeal concerns the whole building where my family is living, I request that the Church Council see that the rooms therein now occupied by any one of the Church Council may be vacated as soon as convenient.

3. That if the Church Council choses, even against my protest, to take any action against me they are free to do so.

4. Please acknowledge receipt of this letter and the enclosed Appeal to the Mahasabha at an early date.

Yours faithfully,

B Hansd

35 South Road,
P.O. Entally.
C A L C U T T A.

Tarikh 28 July, 1936.

GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN MANDALI KI MAHASABHA KO
Bahut bahut Yishusahay !.

Ap Mahasabha ko malum howe ki yah meri Appeal hai jo ki Church Council ke ek Notice par mujhe ap ke sahmne pesh karna para hai.

Main ap ko aj phir se yah jenata hun ki 1935 ki Attirikt Mahasabha men Manyawar Director Stosch sahib ne Lutheran Federation ki sipharish ko (jo sipharish uske nij paramarsh ke anusar thi) jabbardast Mahasabha ko manwaya jaisa ap Mahasabha ko malum bhi hai. Jo ulgulan High School ke bhut-purbb Principal Padri Joel Lakra ke karan hua uske sambandh men mera koi dosh bina dikhaye siriph ulgulan dalwalon ke gul shor se yah sab kuchh kiya gaya, arthat Secretary ka kam mujh se lut liya gaya.Mujh ko alag karne ke liye Federation ne Dir. Stosch ke sath men mano ek prakar ki yuktti rachi ki jo jo ang Council men 6 barason se adhik smay tak hain we Council se alag howen. Khair, dusra jan dosh kare ulgulan kare ,Council & Mahasabha ka hukum na mane aur tisre log aut tisra jan mar khaye. Kya hua ? Yahi Mahasabha Fedreation se doshi thaharayi gai aur uska Church Council jo <u>administrative body</u> hai wah bhi kalankit mani gai aur main bhi jo sare man se Council ki ijjat aur uske adhikar ke liye larta raha so Secretary kam se alag kiya gaya.

2. Aur abhi kya hota hai ki mere Secretary kam se alag hone par Church Council ghar chhorne ki Notice deti hai. Church Council ke Notice pane par main ne ek darkhast Council men bheja aur main ne kaiek karanon ko us men dikhaya par Council un par kuchh dhyan na deke apne jawab aur bichar ko kis adhar par sthir kiya so mujhe na janakar mujhe siriph likha aur janaya hai :"Bichar hua ki Mr. P. Hurad ko antim bar likhi jay ki ghar ko khali kare ,nahin to ~~ghar~~ koi dusra karrawai kiya jayga." Mere darkhast ko Council ne <u>summarily dismiss</u> kar diya. Jo darkhast main ne Council men bheja tha wah 12 June, 1936 ka darkhast bhi ap ke pas pesh kiya jayega.

3. Main to itne din aur itne barason tak chupchap raha aur apne hakk aur mandali men mere sath kisa byawahar howe iske bishay kuchh nahin bola is asre se ki manadali ap hi pahichanegi aur mera apaman nahin karegi. Parantu abhi kya dekhta hun ki samay a gaya hai ki mujhe apni prashansa aur barai

ke nimitt to nahi(jaubhi mujhe barai karne ki jagah hai) parantu awashyakta ke karan kitni baton ko khuli riti se bolna aur likhna parta hai. Ab na kahe aur na likhe kam nahi chalega. Main jitna chupchap hun utnahi log mere upar men charahi karna nahin chhorte hain. So main abhi bahut hi sankshep men likhta hun par jab samay awega to main ap Mahasabha ke sahmne men kholkar sab praman sahit bataunga aur tab ap suniye aur bichar kijiye.

4. Abhi 1918 se 1936 ,in 18 barason ke bhitar men kitni badlahat hui hai aur itne hi barason men bahut baten purani ho gai hain aur we itihasik baten ho gai hain. Is itihas ke bistar aur shuksham baton ko koi nahin janta hai aur bahut log janne bhi nahin chahate hain, hañ hamare missionary log kya Berlin Board bhi janne nahin chahati hai. Koi to samajhte hain ki unko bolne se phalane ki prashansah hogi. Ap logon ko malum howe ki 1918 men Sarkar ne samucha German Mission ki sampatiyon ko Enemey Trading Act ke motabik jabbt kar lii aur hamare Gossner Mandali ki jagah jamin ,school aur mandali kaise abhi hamare hath men aye isko janna chaiye. Isi 1918 men barttaman Metropolitan ne Sarkar ki anumatti aur agya se us samay men Chota Nagpur ka Bishop hoke Ranchi kabarsthan ki purbb or ek kunwa kora jo aj tak logon ki ankhon ke samne men sakshi ke saman khara hai jo sakshi aur bijay ka chinha hai . Aj us kunwa se koi nahin puchhta hai ki tum kahan se aur kaise aya? Itna hi nahi parantu kabarsthan ki purbb or ki samuchi jamin men ghar banane ki new kori gai thi. So wah jamin aur wah kunwa samucha Gossner Mission ki jamin jagah arthat sampatti ko bachane ki new aur arambh hai. Us samay men hamari itni bari mandali men ke itne bahut janon men na koi jan ,na us samay ke koi Padri ya karmmachari na un dinon ki chhoti sabha na koi bari sabha na Maha sabha ,na koi missionary sabha na Berlin Board Bishop ke is kam ko rokne ya band karne ka koi bhi karrawai kiye,na jaisa abhi mujhe "antim bar" likha jata hai waisa Bishop ko antim notice diye. Usi samay men main nirbudhi jan ne Bishop ka sahmna kiya aur jaydad chhurane ki jay ki new dal kar age barha. Un dinon men sahas se karrawai karne aur sir uthane ka hiyaw kisi ko na hua. Parantu aj karrawai karke sampatti ko aur mandali ko bachanewale aur chhuranehare par karrawai karne ko bahut log han Church Council tak bhi nikal para hai. Yah mera abhagya aur mere parishramon ka uchit pratiphal hai.

5. Un larai ke dinon men main ne nidarta se Calcutta ke STATESMAN khabarkagaj men bhi is sampatti aur is mission aur uske logon ke hakk aur adhikar par main ne correspondence kiya aur publicly mandali ke liye lara.

Us lari ke dinon men yah sab karna jokhimmay tha par main is ka koi bhi parwa na karke STATESMAN men likhta raha, jo abhi bhi mere pas praman ke liye moujud hain aur ap log dekh sakte hain. Kya aur kisi Lutheran Chotanagpuri ne publicly (sarbasadharanke sahmne men) is mandali ke liye lara hai ? Main yahan par yah batla dena chahata hun ki swargiya Mahamanyawar bhutpurbb President Hanukh D. Lakra ne pahle to Bishop ke upar darkhast dene men mera birodhi tha aur apne bhai Padri Rufus Lakra ke sang mujhe is murkhta ke kam par hath dalne se rok dene chahe. Picche Presdt. Lakra ne mere samjhane par meri bat ko man kar kaha ab to main burha hua hun aur yadi mujhe ap ke sath Lutheran mandali ke liye phansi bhi jana ho to main parwa nahin karta hun, main ap ke banaye darkhast par sahi dunga. So wah ap, main, aur mere sahas dene par Babu Mashiprakash Horo aur Babu Khristanand Tiru in donon ne bhi bhay chhor ke sab se pahle darkhast par sahi diye hain. Ye do jan abhi bhi jiwit hain aur is bat ke sakshi hain.

6. Aj kal ke bahut log khyal karte hain ki jab German missionary log chale gaye tab us samay ki chhoti sabha Angrezi Mandali se milne nahin chahi aur alag hoke Autonomy grahan kiya aur yon sab baten sidhi ho gain. Yah nahin sochte hain ki kis parkar ki jokhim ko uthha kar mandali sambhali aur sthir kii gai aur aj ka Church Council aur Mahasabha ban gai hai. Mandali ko swadhinta men pahunchne ke liye larai ki shuru jaydad ko lekar hui . Phir age jab mandali ko milane ki ~~xxxxx~~ yuktti hui us samay men bhi main iska birodh karne ko 1918 men Calcutta men National Missionary Council ki Executive men ~~xxx~~ upasthit hua aur wahan Bishop ka sahmna kiya jis ke dwara Janch Commission wa Commission of Inquiry Chota Nagpur ai aur nidan 10 July men Autonomy ghoshna kii gai. Kya yah Autonomy ap se hua ? Nishchay nahin ,kisi ki aguai par hua. Ishwar ne mujh ayogya kambudhhiwale ko apna hathiyar banake Calcutta bheja aur mere aguai tale Mandali Autonomy ko pahunchi.

7. Phir schoolon ke bishay bhi aisa hi tha. Jab Sarkar ne puchhi ki kya mandali schoolon ko chalane sakegi ? Tab High School ghar ke pachhim dakhin wali kothri men ek sabha Mrit Babu Christopher Kumar ki sabhapatitwa men baithi thi. Sabha ne bichar kiya ki Sarkar ko likha jawe ki Ham log to schoolon ko nahin chalane sakenge, so Anglican Bishop ko diya jay. Sabha men main iske birodh kar bola ki ham log nishchay schoolon ko chalawenge. Sabha ka bichar President Hanukh ki sahi par bheji gai, parantu main ne Hanukh babu se kaha ki ap log ab samuchi mandali ko phir Bishop ke hath men bechte hain. Uane kaha tab kya karenge ? Main ne kaha ki main phir Chief Secretary ko

likhunga tab Hanukh Babu ki sahi par pahili chitthi ko rad kar dusri likhi gai ki schoolon ko mandali ap chalawegi aur is prakar se school bhi mandali ke hath men a gaye. Yah kis ke dwara hua ? Nishchay yah bhi Ishwar ne mere dwara se hone diya. Aur usi High School men naye log ake kahate hain ki Mr. Hurad School ke Managing Committee ka member nahin rah sakta hai!

8. Yon sampatti par aur mandali par aur schoolon par hamon ka adhikar hua aur ab jab main Ishwar ki daya se sab baton ko sthir kiya tab is rajya men ek naya Phiaon hua jo Juseph ko na janta tha aur abhi isi Juseph par karrawai karne ko taiyar hai . Mahasabha ko malum howe ki yadi Ishwar mujhe nahin uthata aur mujh ayogya nirbudhi jan ko sahay kar na chalata ki main mandali ke liye yathhashakti kam karun to yah Mandali aj Angrezi mandali aur Angrezi missionariyon ke hath men chali jati aur abhi unke hath rahati. Tab yah Mahasabha aur iski Church Council kahan rahti ? Ye school aur ye mandali -panch kahan rahte. Athawa yah Autonomy aur ye German missionary kahan rahte ? Kya hamare German missionariyon ke ane aur panw rakhne ka sthan rahte ? Par aj ye sab ke sab milkar usi jan ko apne se alag karne men apna anand samajhte hain.

9. To main kya kahun, yadi koi jan Civil Government ke paksh men hoke larta hai aur saphalta pata hai to wah Sarkar uske liye nana prakar ki chinta karti hai. Usko nam aur yash dene ki bat to chhoriye uske liye rupaiya paesa ka dan deti han uske liye ~~jamin~~ aur uske santanon ke lye pirhi pirhi ke liye jamin jagah jagir de deti hai. Par hamare liye kya dhara hai ? Kewal durdurana, har bat men uska bichar karna ,han uspar antim karrawai kardalne ke liye taiyar hona aur usko dur bahar karna. Kya yah Ishwar ki mandali ke yogya hai ? Kya isi prakar ka pratiphal dene ko mandali sikhi hai ? Kya yahi Dharmmapustak ki shikaha hai ? Kya yahi Christian chal hai ?

10. German (Gossner) Mission ne Chota Nagpur men Ishwar ka bachan laya. Is desh men mission stationon ko khara kiya aur ghar darwaza bungla khet ityadi liya aur yah Mission ka prashansaniya karyya hai. Isi jis kam ko Gossner Mission ne 1845 - 1915 arthat 70 barason men kiyawah sab kuchh ek dam ek sang duba ja raha tha aur nasht hone par tha usko main ne ek hi baras men arthat 1918-19 ke bhitar men bachaya aur sthir kiya aur aj mere us sthir kiye hue rajya men ap logon se isi sampatti aur mandali ke ayogya samjha jata hun. Jis jan ne sab kuchh chhuraya kya uska kam ek dam dushne ke yogya hai aur kya wah tiraskar chhor kuchh bhi adar aur hakk pane ke yogya nahin hai ?

11. Berlin Board ke sath men Autonomous mandali ki jo Agreement hai us men German missionariyon ko bungalon men jagah dene ka hakk Berlin Board apne

apne jimma men rakhti hai . Kanun ke anusar abhi German Gossner Mission ka is jaydad par koi hakk nahin hai . Par taubhi ham log sarkari kanun ki riti par to nahin par dharmma (morally) ki riti par yah swikar karte hain ki Berlin Board ka sampatti par bolne ka bahut kuchh hakk hai. Kyon Berlin Board aisa hakk apne hath rakhne chahati hai ? Isi liye ki Autonomous Mandali aur uski Council jo ab tak pura anubhawi (experienced) nahin hui hai so kisi samay men tanta bakhera hone par missionariyon ko niradar kar banglon men rahne nahin denge. Jab missionariyon ki ijjat ki raksha ke liye agreement aur shartt hai kyonki jaydad unki thi to kya usi jaydad ko chhuranewale ke liye bhi aur uski ijjat ke raksha ke liye koi chinta nahin hogi ? Main to jagat ke lekhe murkh sa banke aur apna sab kuchh chhorke bina agreement aur bina shartt mandali ke prem se mandali ki sewa kii hai to kya main bhi dharmma ki riti se (morally) mandali se koi bhi ijjat aur adar pane ke yogya aur active service men rahte tak bhi us chhuraye hui sampatti men adar ke sath rahne ke yogya nahin hun ?

12. Uchit to tha ki Church Council mere bishay men bahut gambhir soch bichar kar mujhe mere barttaman dere men rahne deti aur mujhe dukh na deti par apsos ki bat ki weh mujhe mere chhuraye hui sampatti men mera kuchh bhi hakk na dekhke aur apne hi ko malik janke mujh par karrawai karne ko taiyar hai. Council nahin sochti hai ki yah malikai kaise usko mili. Yahi Council aur uske purbb-adhikari kathin samay men sampatti chhurane ke liye karrawai karne ko kahan the? Yadi Council mujh se subyawahar karne nahin janti hai to main bhi kahta hun ki jab tak main active service men hun main is dere ko nahin chhorunga. Jaisa adar aur ijjat aur hakk German missionariyon ka hai utna aur waisa mera bhi hai. So mujhe koi dukh na dewe.

13. Main itna bhi kahne ka sahas karta hun ki jab tak barttaman Church Council Gossner Mission ke aur mere pratap se abhi samuchi mandali ki sampatti ka malik bani hai to jaisa German missionariyon ka adar karti hai waisa mera bhi adar kare aur jab malik hokar sari sampatti uske hath men hai to itni bari sampatti se apne President aur Secretary ke liye ghar aur bangla khoje par mujhe dukh na dewe. Yah nahin ki main bungla ko apnane chahata hun ya sada ke liye le lene chahata hun. Aisa bichar mujh se dur rahe ,yah ho nahin sakta hai. Main aisa pratiphal nahin chahata hun aur nahin lunga. Prabhu ap apne hathon se mujhe pratiphal dega .Jaubhi Mahasabha ko dur Council ko sochna hai jaisa Pawal Prerit ne 1 Cor. 9: 6-10 men likh diya hai.

14 Ant men phir ek bat kah hi dena chahata hun, ki is mandali ke liye

na kewal main ne parishram kiya aur ninda aur dukh uthaya aparantu iske bachaw ke lye main ne apna pran bhi apriya jana aur main itna bhi taiyar tha ki yadi mujhe phansi bhi jana hota to yah mujhe kabul tha. Han ap log janiye ki main Sarkar ki bishes drishti men rakha gaya tha aur rajyadrohi ke saman dekha jata tha . Yadi main us samay phansi jata to log kya bolte ? Jaisa usne kiya waisa phal paya . Koi mere swarth-tyag ko nahin pahchante na uski prashansa karte . Aur kya mandali meri stri aur balbachon ki chinta karti ? Mujhe aisa bishwas nahin hota hai, kyonki jab mere jite mujh se aisa byawahar hota hai to mere pichh e kya hota so spasht hai. Main ne apna jiwan bhi is mandali ke liye apriya jana aur aj Church Council kahati hai ki mere upar karrawai karegi. Han Mahasabha is par bichar kare jo Mandali ka malik hai aur mandali jo Khrist ki hai so mandali nyay aur dharmma ka khambha hai.

14. Church Council samajhti hai ki jab purana Secretary apne Secretary kam se alag hua hai to uska dera Secretary hi ka ghar hai aur usko chhorna hi chahiye. Yah upari bichar hai. Main barambar yah batlata aya hun ki main pahile mandali ka karmmachari hoke tab Secretary hua aur karmmachari hoke mandali ke ghar men rahta hun aur sirif Secretary ki haisiyat se ghar men nahin raha. Ap log Niyamawali ko dekhiye wahan likha hai jo Mandali ka bartanbhogi karmmachari hai wahi kewal Padadhari ho sakta hai . Is liye main pahile to Karmmachari hoke aur tab Secretary hoke ghar men raha. Kya sab missionary log Council ke padhari hain aur kya sab missionary log Council ke ang hain ? Yadi unko Council ka ang hue bina aur pada-dhari hue bina bhi mandali ke banglon men rahne ka hakk kabul hai to kya mujh ko hamare kam aur parishramon ke karan bhi aur apna sarbaswa tyagne ke karan kisi chhote bangle men bhi rahne ka hakk aur adhikar nahin hai ? Main Secretary hoke bhin bhin sthan aur bunglon men rah chuka hun aur Mahasabha iske janti hai. Itna hi nahin par purane Secretary log aur President log bhi bhin bhin sthanon men aur bhin bhin gharon men rah chuke hain aur kya barttaman Council waisa nahin kar sakti hai ?

So yah meri Appeal ap Mahasabha ke pas Church Council ke us hukum aur phaisla ke biparit pesh kii jati hai jo mujhe 9 July, 1936 ko Memo No. 474/36-F,-29 men bheja gaya hai. Ab Mahasabha meri sab baton par kripaya dhyan deke nyay aur dharmma se bichar kare aur mandali ko adhanyabadi hone ke kalank se bachake uski bhi ijjat ke raksha kare.

Ap logon ka purana Secretary

28. 7. 36.

बुड़जू इलाके ने यह विचार किया कि ~~बड़ू~~ इलाका बड़ी होने के कारण एक चेयरमैन को बुड़जू से पूरे इलाके का काम देखने में अति कठिन है। ~~और~~ यथेष्ट देखभाल नहीं किया जा सकता है। कर्मचारियों को भी इतनी दूरी से मीटिंगों के लिये बुड़जू अत्यधिक कठिन हो जाता है। इस कारण इलाके को विचार हुआ कि इलाका दो हिस्सों में भाग किया जावे और टोकद और बुड़जू इलाका रखा जावे।

टोकद इलाके मे दो पेरिश अर्थात टोकद और कुजूर रहेंगे और बुड़जू इलाके में बुड़जू इलाकेमें बुड़जू, तपकारा और डाड़ीगुटु और सरना टोली रहेंगे।

बुड़जू इलाके में थोड़े समय के लिये यह प्रबन्ध करने का विचार किया गया है कि केवल तीन पेरिश रहे अर्थात बुड़जू, तपकारा और डाड़ीगुटू। जिनमें प्रचारक पद इस प्रकार बाँटे जायेंगे।

बुड़जू :——(१६) बुड़जू, कदमा, बजगमा, बुरसुडीह, जनुमपीड़ी, डमराया
कोटना, कुड़की, जिलिंगकेला, कांजटोली, गुल्टू, कोयोंगसार
इटीपीड़ी, सियांकेल, कोनोवा, सरना टोली और बिरहु।

तपकारा :—— तपकारा, दियांकेल, तोरपा, बिरता, कोनेरा, गोन्डरा
फटका, हबो, रोन्हे और कुदाम। (१०)

डाड़ीगुटु :—— डाड़ीगुटू, बिरजिला, अलौंदी, पानसकम, चोन्डोर,
उलीडीह, फुदी, ~~और~~ चलागी। (८)

Signature

From the Kuratorium,

Berlin Friedenau.

To The C.C.

Lutheran Church

c/o Mr. P.Kandulna

Dear Brethren,

we received with thanks your letters dated 2nd and 3rd of December on the 16th December, viz. 2 days after our Centenary I should gladly have read your congratulatory letter to the assembly at Bethlehem's Church on the 14th. I voiced the heartfelt congratulations of the Indian Lutheran Church myself and shall publish your letter in print. Mind, please, the airmail from Ranchi to Berlin takes sometimes more than 10 days.

We received along with your congratulatory letter the application for a missionary for Singhbhum. We are sorry there is nobody at present among our experienced missionaries who could be spared for Singhbhum.

On the 22nd of January probably the Rev. Dr.theol.O.Wolff and Mrs. H.Wolff and the Rev. J.Klimkeit will sail from Genova. They take a passenger boat and are due Colombo on the 2nd of February. The Wolffs will stay at Madras with Dr. and Mrs. Stählin for a month before proceeding to Ranchi, Mr.Klimkeit will go straight on from Colombo to Ranchi and may be expected there about the 10th of February.

Mrs.Wolff is a Dr.theol. herself as well as her husband. We suggest both should be given work in the Theological Seminary. Both are able to teach Greek in the Highschool in all classes. As they ~~belonged to~~ took the classical course in our German schools, they do at present not speak English quite fluently but either of them will catch up the language quickly. We considered the

question whether we should suggest to give Dr.Wolff work in our Highschool with a view to appoint him principal after some time. Our decision was in the negative. Dr.Wolff and Mrs.Wolff are trained theologically and should be placed in the Theological Seminary.

As to Mr.Klimkeit we propose to appoint him House master of the Hostel in Ranchi in place of Mr.Schernat.

With hearty Iisu sahay

Yours sincerely

J Stosch

Church Council Executive Meeting.
The 26th December, 1936.
at 8 a.m.
-------oOo-------

The Executive of the Church Council met with the Rt. Rev: J. Sandegren, President of the All India Lutheran Federation, on the 26th December, 1936 at 8 a.m.

Present :- Rev: Daud Kujur ---------- President.
" W. Radsick ---------- Treasurer.
" M. Kerschis
Mr. A.L. Tirkey
" Th. Surin ---------- Visitor.
" P.D. Kandulna -------- Secretary.

Rev: Daud Kujur President of the Church led the Council in prayer He and Mr. Tirkey welcomed the President of the Federation.

The President of the Federation in reply said that he had been deputed to Ranchi by the Federation. He further said that the Gossner Church is much in the thoughts of the Federation and the Federation does not wish that any of its members should be suffering.

A group of people from the Ranchi congregation wanted to lay its grievances before the Federation President and the Church Council. It was agreed in the meeting that three representatives of these people should come to the meeting. But they informed Bishop Sandegren that they would submit their grievances to him in writing.

After this Bishop Sandegren informed the Council of the purpose of his visit to Ranchi. Then these points were discussed with him.

I. Calling of Director J. Stosch to Gossner Church for a period of about 5 years.

The Bishop Sandegren said that the problems in the Gossner Church are so complicated that they require some one here, who could study the problems and understand the situation by staying here for a longer period than a Commission can possibly do. This may be done without infringment of the autonomy of the Church. Such a person may well be Director Stosch who should be invited by the Church Council through the Mahasabha to come not as a missionary but as a church worker and he will have the full support of the Federation.

The Gossner Church needs continual support with money so the Church requires some persons who could do something to get money from America and Germany. Dr. Dunkelberger may do this in respect of America and Director J. Stosch may do the same in respect of Germany through the President and Secretary of the World Lutheran Convention who are in Germany. The German side of the world convention ought to be emphasised because unless the convention leaders pass orders no help will come

come from America.

The case of the Gossner Church will be very b
sentions within.

After hearing Bishop Sandegren there was a
matter; some further questions were asked to bring
good suggestion of Bishop Sandegren.

Then the Executive passed the following resoluti
(i) That on account of the long experience and perso
J. Stosch, the Church Council Executive feels strongly t
of inviting Director J. Stosch to the Gossner Autonomous
church worker for a limited period of say five years.
(ii) That the above resolution be placed in the next meeting
Church Council whence it may pass on to the Mahasabha for fina
sion.

II. Bishop Sandegren next suggested that the possibilities of a
co-operation with the Swidish Lutheran Mission of C.P. might be ex
plored.

He stated that it may be possible for the Swidish Mission to rend-
er some help to the Gossner Church, because their work in Abyssinia has
been stopped and they could help this church with men and money for
some time.

The Church Council was very glad to hear of this suggestion which
seems very promising and resolved that negociations with the Swidish
Mission in C.P. be immediately started to explore the possibilities of
having such close co-operation between the two churches, and attempt b e
made to send a deputation of the Gossner Church to have personal talk
with the authorities of the Swidish Mission, after the arrival of their
Mission Director.

III. A Common Liturgy of the Hindi speaking Lutheran Churches.

Bishop Sandegren stated that m any Lutheran churches and missions
in India have decided to adopt the common Liturgy prepare d by the Fede-
ration. The two Hindi speaking Lutheran Churches in India if they have
a common Liturgy and hymnal will have close co-operation between them.
It was suggested a small Committee consisting of the representatives of
the two churches may be formed to transl ate the common liturgy in Hin

The Church Council resolved that the deputa
Church to be appointed as above be also a
the Swidish Mission

common Liturgy and a hymn book.

IV. Bishop Sandegren invited suggestions for the disbursement of the 500 dollars received by him for the Gossner Church from the World Lutheran Convention.

The Council heard this with deep gratitude and expressed the need of help for the Church specially in connection with expenses for the publication of the Lutheran Literature and Pastors' refreshers' class and the High School.

Resolved - That the G.E.L. Church expresses its deep sense of gratitude to the World Lutheran Convention for its timely help to this Church and to the Lutheran Federation of India for securing this help for the Church and hope that the World Convention and the Federation in India would continue to help this Church which is in great troubles at the present time.

Sd. D. Kujur.
President.

Sd. P. Kandulna
Secretary.

बेरलिन होम बोर्ड की चिट्ठी।

कुराटोरियम

बेरलिन फ्रीडनव
जुलाई २, १९३५

छोटानागपुर और आसाम की लूथेरान कलीशिया के ~~बेरलिन~~ बेलिन बोर्ड की ओर से यीशुसहाय।

इकरमा से एक दरख्वास्त बेलिन बोर्ड के पास भेजा गया (ता: इकरमा २८ फ़रवरी १९३५) जिसमे होम बोर्ड से अर्जी ~~कि~~ किई जाती है कि वह अनेक बातों का फ़ैसला करे।

भेजनेहारे विशेष करके फिडरेशन के फ़ैसला के इस वाक्य से निराश हो गये कि महासभा पर यह दोष फेंका जाता है कि वह 'अनपारलियामेन्टरी' (Unparliamentary) काम किया। बेलिन के होम बोर्ड के लोगों को यह मालूम नहीं है कि किन किन विशेष बातों को फिडरेशन अनपारलियामेन्टरी कहती है, फिडरेशन की कमीशन ही उसको जानेगी। हम लोग इतनाही कहते हैं कि आप लोग जो १९३४ के मार्च महीने की महासभा के अंग थे, आपही सोचिये कि वह महासभा उचित रीति से चलती थी वा नहीं, 'अनपारलियामेन्टरी' का अर्थ यह है अर्थात 'जो सभा के योग्य नहीं है'। आप लोग सोचिये कि उस १९३४ के मार्च महीने की यह महासभा में कित[ना] गोलमाल था कितनी अनुचित बातें हां अपमान की बातें क[ही] गई; क्या यह ख्रीष्टियान सभा के योग्य है? अगर नहीं है तो व[ह] व्यवहार 'अनपारलियामेन्टरी' था। फिर दरख्वास्त में लिखा गया है कि डाईरेक्टर स्तोश साहिब ने कलंक की अर्थात 'अन-पारलियामेन्टरी' की बात को विना नोट किये ठहरा करने दिया। डाईरेक्टर स्तोश साहिब कहते हैं कि मैंने ऐसा नहीं किया; पर महासभा से पूछा कि आप लोग कमीशन के फ़ैसला औ[र] सिफारिशों को मंजूर करते हैं ~~वा~~ कोई ~~का~~ उज्र करता है। इस[पर] किसीने उज्र नहीं किया। महासभा के मिनिट से प्रगट होगा यह बात ठीक है वा नहीं।

आगे दरख्वास्त देने वाले लोग बताते हैं कि गत व[र्ष] मार्च महीने में महासभा ने यह संकल्प किया कि सब बातें [जो] झगड़े के कारण हैं, सेप्टेम्बर या ओक्टोबर की महासभा में मि॰ स्तोश और लूथेरान फिडरेशन की प्रतिनिधियों की उपस्थिति [में] विचार किये जावें; पर यह संकल्प एक दम रद्द कर दिया [गया]। हम लोग पूछते हैं, क्या बेलिन बोर्ड महासभा का नौकर है जिसको महासभा हुक्म के ऐसे कह सकती है कि ऐसा करो अथवा वैसा करो? क्या फिडरेशन छोटानागपूर की कलीशिया [का] गुलाम है कि फिडरेशन को अपना काम महासभा के हुक्[म] के अनुसार करना पड़े? डाईरेक्टर स्तोश साहिब ने ~~एक~~ दम आरम्भ ही में पहिचाना कि यह अनहोनी बात है कि महास[भा]

Is there one constant truth which will not change
One end to all the ways which we are led,
One common faith which we will not find strange
When all is strange about us who are dead?
Is there a plan to pilot us through life
Over the lonely paths by which we stray?
Do we find peace when we have done with strife
After the darkness do we wake to-day?
Men's souls are each one prisoned in a cage
Yet each soul seeks the comfort of its kind,
Are they but marks at random on the page
Of chance, or governed by a greater mind?
Each man can make a God-head for his friends
But will that God be faithful to the end?

If from the varied faiths which men have held,
dogmatic, strange and multitudinous,
Some meagre thin and some grotesquely swelled,
And all against their neighbours murderous,
I could distil one fundamental truth
which brooks no argument nor suffers change,
Acceptable alike to Age and Youth,
To heart and mind, however, wide their range;
One last truth to form foundation for belief,
One steadfast light in all my fear and doubt
One constant motif through life's joy and grief
Still heard above the clamour and the shout.
Then I would understand what Power makes
Man still aspire though all creation shakes.

Hugh MacBeth.

की बैठकों ही में कचहरी का काम किया जावे ~~कि~~ और मुद्दई ~~औ~~
मुद्दालेह के आमने सामने फ़ैसला किया जावे। आप लोग
सोचिये, अनेक लोग कहते हैं कि कमीशन अपना काम हड़बड़ी से
किया, केवल ९ दिन बैठी। अगर कमीशन जिसके अंग सब
बुद्धिमान हैं और जानते हैं कि ऐसा काम किस प्रकार से चलाना
चाहिये, अगर यह कमीशन अपना काम नव दिनों में बड़ी कठिनता
से पूरा कर सकी तो कितने दिन लगते यदि कमीशन महासभा के
साथ बैठी होती? क्या जाने चार हफ़्ते पर्याप्त नहीं होते और गोल-
माल कितना बड़ा होता। यह पहिचान के डाईरेक्टर स्तोश साहिब
ने मिड्रैशन को अर्जी किई कि कमीशन को जल्दी भेजें और
तब रांची में पहुंच कर स्तोश साहिब ने चर्च कौंसिल को बताया
कि अच्छा होगा कि कमीशन ~~के बिना~~ महासभा के बिना बैठे
चर्च कौंसिल उस समय अर्थात ओक्टोबर के अंत में मंजूर किया,
वैसाही डिस्सेन्टर लोगों के मालिक लोग भी और वे जिनसे
स्तोश साहिब ने रांची में इस बात के विषय सलाह पूछा ‡ उ
~~सब~~ सभों ने मंजूर किया। महासभा की बैठकों में (दिसम्बर १९३)
कोई नहीं उठा यह कहके कि जो आप लोगों ने किया सो ठीक न
है। जब तब तो हम पूछते हैं: क्या यह उचित है कि
पीछे अनेक लोग जिनको महासभा का फ़ैसला अच्छा नहीं लगा
है, अज्ञानी लोगों को उसकाते और इनको सही करवाते हैं, यह
कहके कि कमीशन को ~~सब~~ महासभा में उपस्थित होना था
हम लोगों के विचार में यह बात कहने का समय नोवेम्बर
महीने में था महासभा की बैठकों के आरम्भ में ही था। उज्र
की बातों को सुसमय में कहिये और पीछे चुप रहिये। दरख्वास्त
के आरम्भ में यह पूछा गया "मुद्दई और मुद्दालेह के आमने सामने
बिना किये इज़हार लेकर कैसे हाकिम कह सकता है कि काम
दोषीदार है? इससे मालूम ~~होता है~~ पड़ता है कि दरख्वास्त देने
वाले लोग डाईरेक्टर स्तोश और कमीशन के काम को ठीक नहीं
बूझा। वे हाकीम के अख्तियार से नहीं आये, किसी ने उनको हाकिम
का अख्तियार नहीं दिया। वे बैंच के ऐसे आये और इसलिये वे महा-
सभा के अंगों को वचन और सक्रामेन्ट से तैयार किया। इसलिये डाइ-
रेक्टर स्तोश ने फिर फिर के और सभों से बोला "हर एक अपना दोष
पहिचाने और मान लेवे, जो अपना दोष पहिचानता है उसका दोष
क्षमा किया जाता है। किसीने जय नहीं पाया और न कोई हार गया।
बात यह नहीं है कि कौन दोषीदार है। कमीशन के फ़ैसला और
~~सिफारिसों~~ में हर एक को दिखाया जाता है कि उसने किस बात में चू
सिफारिशों

किया। कमिशन ~~के~~ फैसला के पहले खंड को पढ़िये जिसमें उस वैरता के विषय लिखा गया है जो कोई बहिन लोग एक दूसरे से रखते हैं। हर एक अपना दोष को पहिचाने और दूसरे के दोष को न बढ़ावे। जो अपने को धर्मी ठहराता है, पवित्र के संग उसका कुछ अंश नहीं है।

अन्त में दरखास्त देने वाले लिखते हैं कि लेट प्रेसिडेन्ट (~~Late P~~ Late President) और प्रिन्सिपल के विषय सिड-रेशन ने कुछ प्रशंसा की बात लिखी है परन्तु सेक्रेटेरी के विषय प्रशंसा का एक शब्द भी नहीं लिखा गया है। सारा दोष चर्च कौंसिल और महासभा पर मढ़ दिया गया सो दोषी-दारों ही का भला दुनिया में होता है। ये बातें सच नहीं हैं। पढ़िये ~~सिफारिश~~ सिफारिश नं० 6 इसमें पाते हैं कि न केवल लेट प्रेसिडेन्ट, परन्तु चर्च कौंसिल के सब अंगों की प्रशंसा के विषय लिखा गया है। याद भी करें कि महासभा की बैठकों में सेक्रेटरी के परिश्रम, जुलम और साहस की प्रशंसा विशेष पत्र से किया गया। पढ़िये जो बातें डिसेन्टर लोगों के विषय में कमिशन के फैसला में लिखी गई है। उदास की बात है, कि दरखास्त में दोषीदार शब्द फिर मिलता है। जिनको दरखास्त देनेहारे दोषीदार कहते हैं उनके मालिक लोग महासभा के सामने अपना दोष मान लिये, इस कारण से उनका दोष क्षमा किया गया है, आगे दोषीदार नहीं हैं। क्या लूथेरान मंडली के भाई लोग भूल गये कि पाप क्षमा किसको कहते हैं और उसका गुण क्या है?

प्यारे भाई लोगो! ~~क~~ मि० कमिशन के सभों ने इण्डियन, यूरोपियन और अमेरिकन एक मन होके फैसला और सिफारिशों को लिखवाया, उनकी फैसला को ग्रहण करना चाहिये। बहुत २ लोग गत साल के अंतिम महीनों में मनसे विनती प्रार्थना किया करते थे कि ईश्वर कमिशन और आर्बिटर स्लोश के मनों को चलावे और उनकी अगुवाई करे। क्या ईश्वरने विन्ती को नहीं सुनी? निश्चय सुनी। यदि हम यह विश्वास करते हैं कि हम लोगों की विन्ती परमेश्वर मालिक लोगों के मनों को चलाता है ~~और~~ और सारी सच्चाई लों मार्ग बतावेगा तो हम कैसे कहेंगे कि अन्याय का फैसला है?

कमिशन और आर्बिटर स्लोश के काम से लूथेरान

मंडली को अवसर मिले कि नये मनसे आरम्भ करें।
हम सबके सब ईश्वर से बिन्ती करें, "हे प्रभु मुझे नये मन को दान करें; क्या जाने ईश्वर दूसरी बेर ऐसा एक अवसर देगा
मंडली के सब भाई बहिनों से हम, बेर्लिन बोर्ड की यह अर्जी है कि सब बैरतर छोड़ दीजिये और मनसे क्षमा दीजिये और एक दूसरे को प्यार कीजिये। ईश्वर का आशीष उनपर है जो यीशु मसीह से क्षमा पाते हैं।

यीशुसहाय।

बेर्लिन बोर्ड के अंग

(१) sd/ Walter Richler Reichhelm
Chairman.
(२) sd/ Forzard.
(३) sd. A. Brüsau
(४) sd. H. Roterberg
(५) sd. D. E. Vits.
(६) sd. Th. Elster
(७) sd. K. Foertsch
(८) sd. J. Elster
(९) sd. H Beenken
(१०) sd. Lokies
(११) sd. J. Stosch

53/37/F.-51 15 March 37.

Head-Mistress,
Bethesda M.E. School,
Ranchi.

Dear Miss Sokey,

The Church Council considered and thought it good that a report of the Bethesda School be read to the coming Mahasabha and hence an item has been given in the Agend of the Mahasabha. I am also herewith sending a copy of the Agenda for your information.

Yours sincerely,

[signature]

M E M O R A N D U M.

PASTORS' PENSION.

Memo No. 647/36/F-29 dated 15th August 1936 from the Secretary of the G.E.L. Church to the Secretary of the Board of Trustees.

----***------

For the next Mahasabha

Church Council
Received 4. 9. 36
Register No. 337
Date.........
File...... 28.
Reply No. ....
Date...

Extract from the Minutes of the Church Council Executive of the 14th August 1936.

" Item no.17 Padriyon ke pension ke liye paisa.

SANKALP:- Ki Trustee Board Secretary ko arji kiya jay ki pension dene ke liye mahina mahina Rs 50/- bhejne ki kripa kare. Aur yadi ho sake to 1936 ke January mahina se hisab kar yah pension ka rupaiya Trustee Board kripaya dewe ".

In English

" Item no.17:- Money for the Pastors' Pension.

RESOLVED:- That the Secretary of the Board of Trustees be requested to send Rs 50/- per month towards the payment of pension of the Pastors; and if possible, the Board of Trustees may do the favour of making this payment with effect from January 1936."

2. The action taken by the Board of the Trustees on the subject is in Item No.7 of the Minutes of the Trustees' meeting held on 2nd November 1935 and is to the following effect:-

" 7. INVESTMENT OF THE TRUSTEES' MONEY:-

x x x x x

RESOLVED:- (1) that the Trust money up to Rs 25,000/- as the money becomes available, be invested in Government ~~Boards~~ Bonds or Securities; and also

(2) that the Trustees express themselves as agree--able to the use of the interest on the invested sum or sums not exceeding Rs 25,000/- by the Church Council of the G.E.L. Church for pensions or other form of help to Pastors of the Church, provided a suitable resolution requesting the Board of Trustees be forthcoming from the Church Council and the

General Conference of the G.E.L. Church".

3. Soon after the adoption of the above resolution, the Secretary, Board of the Trustees, sent, an extract of the Minutes to the then Secretary of the Church Council with the request to take necessary action at the Extraordinary General Conference of the G.E.L. Church in November 1935, but no action was taken by the Church Council to give effect to the resolution of the Board of the Trustees.

4. On the 1st August 1936 the Rev. W. Radsick and the Rev. M. Kerschis and the Rev. D. Kujur, President of the G.E.L. Church met me at Purulia and asked me to do something for the pension of the Pastors. I told them that unless a request came from the Church Council and the General Conference of the G.E.L. Church, I could not do anything personally in the matter. In pursuance of that conversation, the Executive of the Church Council has now passed the above quoted resolu--tion. I may also mention that I had told the three reverend gentlemen that the Board of the Trustees could afford to pay for the pension of the Pastors at the rate of Rs 50/- from the month in which the request of the Church Council came.

5 The members of the Board of the Trustees are now requested to give their opinion in the matter. In ~~thxix~~ anticipation of a suitable resolution forthcoming from the General Confere--nce in 1937- (in 1936 there will be no General Conference) in my opinion Rs 50/- per month may be paid to the Church Council for the pension of the Pastors from August 1936.

An early reply is requested.

Purulia,
25-8-1936.

Sd. D.M.Panna ,
Secretary,
Board of Trustees, G.E.L.
Church Property, Chotanagpur
and Assam.

Memo No.306 /36 Purulia, the 27th Aug.1936.

Copy forwarded to the Secretary ,G.E.L.Church ,Ranchi ,for information.

D M Panna
Secretary, Board of Trustees .
27.8.36.